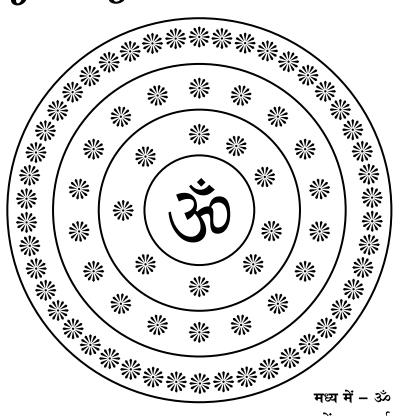
विशब

अष्टापद् पूजा, आरती, चालीसा एवं श्री ऋषभदेव मण्डल विधान



प्रथम वलय में - 9 अर्घ्य

द्वितीय वलय में - 18 अर्घ्य

तृतीय वलय में - 46 अर्घ्य

कुल 73 अर्घ्य

ः रचयिता ः

प. पू क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशवसागर जी महाराज

कृति : विशद अष्टापद तीर्थ विधान

कृतिकार : प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण : प्रथम-2018 प्रतियाँ : 1000

संकलन : मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोगी : आर्थिका श्री भिक्तभारती माताजी

ऐलक श्री विदक्ष सागर जी महाराज क्षुल्लक श्री विसोमसागरजी महाराज क्षुल्लिका श्री वात्सल्यभारती माताजी

संपादन : ब्र. ज्योति दीदी 9829076085

ब्र. आस्था दीदी 9660996425,

ब्र. सपना दीदी 9829127533

संयोजन : ब्र. सोनू दीदी, ब्र. आरती दीदी,

प्राप्ति स्थल : 1. विशद साहित्य केन्द्र सुरेश जैन सेठी जयपुर,

9413336017

2. श्री महेन्द्र कुमार जैन, सैक्टर-3 रोहिणी,

9810570747

3. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी

09416888879

4. विशद साहित्य केन्द्र, हरीश जैन, दिल्ली

मो. 09818115971, 09136248971

मूल्य : 35/- रु. मात्र

ः अर्थ सौजन्य ः

मुद्रक : पारस प्रकाशन, दिल्ली. मो.: 9811374961, 9811363613 ईमेल : pkjainparas@gmail.com, kavijain1982@gmail.com

मंगलाष्टक (भाषा)

पूजनीय इन्द्रों से अर्हत्, सिद्ध क्षेत्र सिद्धी स्वामी। जिन शासन को उन्नत करते, सुरी मुक्ती पथगामी॥ उपाध्याय हैं ज्ञान प्रदायक, साधु रत्नत्रय धारी। परमेष्ठी प्रतिदिन पापों के. नाशक हों मंगलकारी॥1॥ निमत सुरासर के मुक्टों की, मिणमय कांति शुभ्र महान्। प्रवचन सागर की वृद्धि को, प्रभु पद नख हैं चंद्र समान॥ योगी जिनकी स्तुति करते, गुण के सागर अनगारी। परमेष्ठी प्रतिदिन पापों के. नाशक हों मंगलकारी॥2॥ सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण युत, निर्मल रत्नत्रयधारी। मोक्ष नगर के स्वामी श्री जिन, मोक्ष प्रदाता उपकारी॥ जिन आगम जिनचैत्य हमारे, जिन चैत्यालय सुखकारी। धर्म चतुर्विध पंच पाप के, नाशक हों मंगलकारी॥3॥ तीन लोक में ख्यात हुए हैं, ऋषभादिक चौबीस जिनदेव। श्रीयुत द्वादश चक्रवर्ति हैं, नारायण नव हैं बलदेव॥ प्रति नारायण सहित तिरेसठ, महापुरुष महिमाधारी। पुरुष शलाका पंच पाप के, नाशक हों मंगलकारी।।4।। जया आदि हैं अष्ट देवियाँ, सोलह विद्यादिक हैं देव। श्रीयुत तीर्थंकर की माता-पिता, यक्ष-यक्षी भी एव॥ देवों के स्वामी बत्तिस वस्, दिक् कन्याएँ मनहारी। दश दिकपाल सहित विघ्नों के, नाशक हों मंगलकारी॥५॥ स्तप वृद्धि करके सर्वोषधि, ऋद्धी पाई पञ्च प्रकार। वस् विधि महा निमित् के ज्ञाता, वस्विधि चारण ऋद्धीधार॥ पंच ज्ञान तिय बल भी पाये, बुद्धि सप्त ऋद्धीधारी। ये सब गण नायक पापों के, नाशक हों मंगलकारी॥६॥

आदिनाथ स्वामी अष्टापद, वासुपूज्य चंपापुर जी। नेमिनाथ गिरनार गिरि से, महावीर पावापुर जी॥ बीस जिनेश सम्मेदशिखर से, मोक्ष विभव अतिशयकारी। सिद्ध क्षेत्र पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी॥७॥ व्यंतर भवन विमान ज्योतिषी, मेरु कुलाचल इष्वाकार। जंबू शाल्मिल चैत्य वृक्ष की, शाखा नंदीश्वर वक्षार॥ रूप्यादि कुण्डल मनुजोत्तर, में जिनगृह अतिशयकारी। वे सब ही पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी॥8॥ तीर्थंकर जिन भगवंतों को. गर्भ जन्म के उत्सव में। दीक्षा केवलज्ञान विभव अरु, मोक्ष प्रवेश महोत्सव में॥ कल्याणक को प्राप्त हुए तब, देव किए अतिशय भारी। कल्याणक पांचों पापों के. नाशक हों मंगलकारी॥१॥ धन वैभव सौभाग्य प्रदायक. जिन मंगल अष्टक धारा। सुप्रभात कल्याण महोत्सव, में सुनते-पढ़ते न्यारा॥ धर्म अर्थ अरु काम समन्वित, लक्ष्मी हो आश्रयकारी। मोक्ष लक्ष्मी 'विशद' प्राप्त कर, होते हैं मंगलकारी॥10॥

।।इति मंगलाष्टक।। पुष्पांजलिं क्षिपेत।।

हस्त शुद्धि

ॐ हीं असुजर-सुजर हस्त प्रच्छालनं करोमि स्वाहा। अमृत शुद्धि मंत्र-ॐ हीं: अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं म्रावय-2 सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ठः ठः हीं स्वाहा।

"जल शुद्धि मंत्र"

3ँ ह्रां ह्रां हूं ह्रौं ह्र: नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्म महापद्म तिगिंछ केसिर पुण्डरीक महापुण्डरीक गंगा सिन्धु रोहिद्रोहितास्या हरिद्धिरिकान्ता सीता सीतोदा नारी नरकान्ता सुवर्णकूला रूप्यकूला रक्ता रक्तोदा क्षीराम्भोनिधि शुद्ध जलं सुवर्ण घटं प्रक्षालितपरिपूरितं नवरत्न गंधाक्षत पुष्पार्चित ममोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झौं झौं वं वं मं मं हं हं क्षं क्षं लं लं पं पं द्रां द्रों द्रीं हों स: स्वाहा।

(पीली सरसों अथवा लवंग से जल शुद्ध करना।)

लघु जलाभिषेक पाठ-1

तर्ज- आलोचना पाठ (चाल छन्द)

परिणाम की शुद्धी हेतू, जिनिबम्ब परम है सेतू। जिन के दर्शन को पाते, निज के दर्शन हो जाते॥ परमेष्ठी पंच हमारे, हैं तारण तरण सहारे। हम जिनाभिषेक को आए, जिनपद में शीश झुकाए॥१॥ (श्वोसोच्छवास पूर्वक नौ बार णमोकार मंत्र जाप करें) अभिषेक प्रतिज्ञा

जिन प्रतिमा के न्हवन का, करते हम संकल्प। भाव सुमन अर्पण करें, छोड़ के अन्तर्जल्प।।2।। ॐ हीं अभिषेक प्रतिज्ञायां परिपुष्पांजलि क्षिपेत्।

तिलक लगाने का मंत्र
चंदन खुशबूदार ले, तिलक करें नव अंग।
करें इन्द्र की कल्पना, धारें विशद उमंग॥

ॐ हीं नवांगेषु तिलकं अवधारयामि।

श्रीकार लेखन

उभय लक्ष्मी प्राप्तजिन, तीर्थंकर भगवान। पीठोपरि श्रीकार हम, लिखते महति महान॥३॥ ॐ ह्रीं अर्हं पीठोपरि श्रीकार लेखनं करोमि।

"सिंहासन स्थापना"

पाण्डु शिला की कल्पना, करते यहाँ विशेष। न्हवन हेतु जिस पर यहाँ, तिष्ठो श्री जिनेश।।४।।

ॐ हीं श्री पीठथापनं (सिंहासन) स्थापनं करोमि।

"जिनबिम्ब स्थापना"

भिक्तभाव के रत्न जिड़त, पावन सिंहासन। हृदय कमल मेरा हे प्रभु, भावों का आसन॥ आहवानन है यहाँ आपका, सिंहासन पर। नाथ! पधारो आप विशद, श्रद्धा आसन पर॥५॥

ॐ हीं श्री धर्मतीर्थाधिनाय भगविन्नह पाण्डुक-शिलापीठे सिंहासने तिष्ठ तिष्ठ जिनबिम्ब स्थापनं करोमि।

"चार कलश स्थापना"
प्रासुक निर्मल नीर से, कलश भराए चार।
स्थापित चड कोंण में, करते मंगलकार॥६॥
ॐ हीं चतु:कोणेषु स्वस्तये चतुः कलशस्थापनं करोमि।
"अर्घ चढावें"

जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल साथ। करने को अभिषेक हम, अर्घ्य चढ़ाते नाथ!॥७॥ ॐ ह्वीं स्नपनपीठस्थित जिनायर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

"जल से अभिषेक"

जिन की मुद्रा जिन बिम्बों में, विशद झलकती अपरम्पार। भावों से जिनवर का दर्शन, करते हैं हम बारम्बार॥ करते न्हवन यहाँ भक्ती से, नाथ! आपकी जय जय हो। मोक्ष मार्ग पर बढ़े प्रभू मम्, जीवन यह मंगलमय हो॥॥॥ ॐ हीं श्रीं क्लीं ऐं अर्ह वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं यं झं झं झवीं झवीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर-जलेन जिनाभिषेचयामि स्वाहा।

"चार कलश से अभिषेक"

करते न्हवन चार कलशों से, कर्म घातिया मम क्षय हों। अनन्त चतुष्टय पा जाऐं, हे नाथ! आपकी जय जय हो॥ करते न्हवन यहाँ भक्ती से, मम जीवन प्रभु अक्षय हो। मोक्ष मार्ग पर बढ़े प्रभू मम्, जीवन यह मंगलमय हो॥९॥ ॐ हीं श्री श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसन्तं श्री वृषभादिमहावीरान्त- चतुर्विंशति तीर्थंकर-परम-देवं-आद्यानां आद्ये मध्यलोके, जम्बूद्वीपे, भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे.... प्रदेशे....नाम्निनगरे.... तिथो....वासरे मुन्यार्थिका-श्रावक- श्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं चतुः कलशेन जलेनाभिषिंचयामः॥

(6)

"वृहद जिनाभिषेक"

परमौदारिक परम सुगन्धित, प्रभु तन से शुभ अतिशय हो। न्हवन सुगन्धित जल से करते, नाथ! आपकी जय-जय हो॥ करते न्हवन यहाँ भक्ती से, कर्मों पर मेरी जय हो। मोक्ष मार्ग पर बढ़े प्रभू मम्, जीवन यह मंगलमय हो॥10॥ ॐ हीं श्री क्लीं ऐं अर्ह वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झवीं झवीं क्वीं क्वीं द्रां द्रां द्रीं हीं हं सं क्वीं क्वीं हां सः झं वं हः यः सः क्षां क्षीं क्षं क्षें क्षें क्षों क्षों क्षं क्षं क्षं हीं हं हं हं हैं हं हं हीं द्रां द्रीं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः इति सुगन्धित जलेन वृहच्छांति-मन्त्रेणाभिषेकं करोमि।

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय। जिनाभिषेक करके 'विशद' पावन अर्घ्य चढ़ाय॥ ॐ हीं अभिषेकान्ते वृषभादिवीरान्तेभ्योऽर्घ्यं निर्व. स्वाहा। दोहा- शुद्ध वस्त्र से बिम्ब का, करते हम प्रक्षाल। यही भावना है विशद, कटे कर्म जंजाल॥12॥ ॐ हीं अमलांशुकेन जिनबिम्बमार्जनं करोमि।

आसन पर जिनराज को, करें विशद आसीन। विनयभाव आदर सहित, सब मिल ज्ञान प्रवीण॥13॥

ॐ हीं अभिषेकोपरान्ते सिंहासने जिनिबम्ब स्थापनं करोमि।

नीर गंध आदिक सभी, द्रव्यों का ले अर्घ्य।

जिन चरणों अर्पित करें, पाने सुपद अनर्घ्य।।14।।

ॐ हीं पीठ स्थित जिनायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- पूज रहे तव पाद हम, तारण-तरण जहाज। भव-भव भ्रमण विनाशकर, पाएँ सिद्ध समाज॥15॥ (पुष्पांजलिं क्षिपेत्।)

भजन-अभिषेक समय का

(तर्ज-करले जिनवर का गुणगान आई मंगल घड़ी...)

करने जिनवर का अभिषेक, आई सारी नगरी। आई सारी नगरी, झमे जनता सगरी॥ करने जिनवर का अभिषेक, आई सारी नगरी।।टेक।। प्रासुक करके जल भर करके, सिर के ऊपर ढारे। करते हम अभिषेक प्रभु का, जागे भाग्य हमारे॥ सिर पर रखकर लाए भक्त, देखो जल गगरी। करने जिनवर का अभिषेक, आई सारी नगरी॥1॥ पाण्डुक शिला पे जिन प्रतिमा को, भाव सहित पधराए। चार कलश चारों कोंणों पर, जल भरकर रखवाए॥ खुशियाँ छाई चारों ओर, हमारी नगरी। करने जिनवर का अभिषेक, आई सारी नगरी॥2॥ श्री जिन बिम्ब प्रतिष्ठा करके, जिनका न्हवन कराते। विशद भाव से गंधोदक ले. अपने माथ लगाते॥ चलो चले भाई हम सब, शिव डगरी। करने जिनवर का अभिषेक. आई सारी नगरी॥3॥ आई सारी नगरी, झुमे जनता सगरी॥ करने जिनवर का अभिषेक, आई सारी नगरी।।टेक।।

पंचामृत अभिषेक पाठ

(शम्भू छन्द)

श्रीमत् जिनवर वन्दनीय हैं, तीन लोक में मंगलकार। स्याद्वाद के नायक अनुपम, अनन्त चतुष्टय अतिशयकार।। मूल संघ अनुसार विधि युत, श्री जिनेन्द्र की शुभ पूजन। पुण्य प्रदायक सद्दृष्टि को, करने वाली कर्म शमन।।1।। ॐ हीं क्ष्वीं भू: स्वाहा स्नपन प्रस्तावनाय पुष्पांजिलं क्षिपेत्।

श्रीमत् मेरू के दर्भाक्षत, युक्त नीर से धो आसन। मोक्ष लक्ष्मी के नायक जिन, का शुभ करके स्थापन॥ मैं हूँ इन्द्र प्रतिज्ञा कर शुभ, धारण करके आभूषण। यज्ञोपवीत मुद्रा कंकण अरु, माला मुकुट करूँ धारण।।2।। ॐ नमो परम शान्ताय शांतिकराय पवित्रीकृताय अहं रत्नत्रयस्वरुपं यज्ञोपवीत धारयामि मम गात्रं पवित्रं भवतु हीं नमः स्वाहा।

तिलक लगाने का मंत्र

हे विबुधेश्वर! वृन्दों द्वारा, वन्दनीय श्री जिन के बिम्ब। चरण कमल का वन्दन करके, अभिषेकोत्सव कर प्रारम्भ॥ स्वयं सुगन्धी से आये ज्यों, भ्रमर समूहों का गुंजन। गंध अनिन्द्य प्रवासित अनुपम, का मैं करता आरोपण॥॥॥ ॐ हीं नवांग तिलकं अवधारयामि स्वाहा।

भू प्रच्छालन मंत्र

जो प्रभूत इस लोक में अनुपम, दर्प और बल युक्त सदैव। बुद्धीशाली दिव्य कुलों में, जन्मे जो नागों के देव।। मैं समक्ष उनके शुभा अनुपम, करने हेतू संरक्षण। स्नपन भूमि का करता हूँ, अमृतजल से प्रच्छालन।।4।। ॐ हीं जलेन भूमि शुद्धिं करोमि स्वाहा।

पीठ प्रच्छालन मंत्र

इन्द्र क्षीर सागर के निर्मल, जल प्रवाह वाला शुभ नीर। हरता है संसार ताप को, काल अनादि जो गम्भीर।। जिनवर के शुभ पाद पीठ का, प्रच्छालन करता कई बार। हुआ उपस्थित उसी पीठ को, प्रच्छालित मैं करूँ सम्हार॥5॥ ॐ हां हीं हूँ हैं ह: नमोऽहते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन पीठप्रक्षालनं करोमि स्वाहा।

श्री कारलेखन मंत्र

श्री सम्पन्न शारदा के मुख, से निकले जो अतिशयकार। विघ्नों का नाशक करता है, सदा सभी का मंगलकार।। स्वयं आप शोभा से शोभित, वर्ण रहा पावन श्रीकार। श्री जिनेन्द्र के भद्रपीठ पर, लिखता हूँ मैं अपरम्पार।।।। ॐ हीं पाण्डुकशिला पीठे श्रीकारलेखनं करोमि स्वाहा।

अग्नि प्रज्ज्वलन क्रिया

दोहा- मोह रूप वन दहन में, पावन रहे समर्थ। अग्नि प्रज्ज्वलन कर रहे, हम पूजा के अर्थ॥७॥

ॐ ह्रीं ज्ञानोद्योताय नम: स्वाहा।

दश दिग्पाल आह्वान

इन्द्र अग्नि यम नैऋत पावन, वरुण पवन कुबेरैशान। धरणेन्द्र सोम सभी जिनवर का, करो न्हवन तुम महति महान॥ अपने-अपने अनुचर सारे, अपने सब चिन्हों के साथ। करो भेंट स्वीकार यहाँ सब, जिन पद आप झुका कर माथ॥॥॥

दशदिक्पाल के मंत्र

ॐ आं क्रौं हीं इन्द्र आगच्छ-आगच्छ इन्द्राय स्वाहा॥१॥ ॐ आं क्रौं हीं अग्ने आगच्छ-आगच्छ आग्नेय स्वाहा॥१॥ ॐ आं क्रौं हीं यम आगच्छ-आगच्छ यमाय स्वाहा॥४॥ ॐ आं क्रौं हीं नैऋत आगच्छ-आगच्छ नैऋताय स्वाहा॥४॥ ॐ आं क्रौं हीं वरुण आगच्छ-आगच्छ वरुणाय स्वाहा॥६॥ ॐ आं क्रौं हीं पवन आगच्छ-आगच्छ पवनाय स्वाहा॥६॥ ॐ आं क्रौं हीं कुंबेर आगच्छ-आगच्छ कुंबेराय स्वाहा॥१॥ ॐ आं क्रौं हीं ऐशान आगच्छ-आगच्छ ऐशानाय स्वाहा॥८॥ ॐ आं क्रौं हीं धरणेन्द्र आगच्छ-आगच्छ धरणेन्द्राय स्वाहा॥१॥ ॐ आं क्रौं हीं सोम आगच्छ-आगच्छ सोमाय स्वाहा॥१॥

दशदिक्पालों का अर्घ्य

तीन लोक के नाथ कहे जो, केवलज्ञानी महति महान। दस प्रकार के धर्म की वृष्टी, तीन लोक में करें प्रधान।। गुण रत्नों के कहे महार्णव, जिनपद चढ़ा रहे हम अर्घ्य। 'विशद' कुसुम अक्षत आदिक का, अर्घ्य चढ़ा पद पाओ अनर्घ्य॥९॥ ॐ हीं इन्द्रादि दशदिग्पालेभ्यो इदं अर्घ्य पाद्यं दीपं धूपं चरुं बिल स्वस्तिकं अक्षतं यज्ञ भागं च यजामहे प्रतिगृहतां प्रति गृहतां स्वाहा।

क्षेत्रपाल का अर्घ्य

भो! क्षेत्रपाल हो रक्षपाल, तुम जिन शासन के महति महान। गुण चन्दन तेलादि धूप ले, वसु द्रव्य से करते सम्मान।। यज्ञ भाग ले करें अर्चना, श्री जिनेन्द्र का मंगलगान। जिनाभिषेक पूजा विधान में, आके पाओ निज स्थान॥१०॥ ॐ आं क्रों अत्रस्थ विजयभद्रादि पञ्च क्षेत्रपाल इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं दीपं चर्ह्यं विलं स्वस्तिकं अक्षतं यज्ञ भागं च यजा महे प्रतिग्रहतां-प्रतिग्रहतामीति स्वाहा। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत)

जिनबिम्ब स्थापन मंत्र

गिरि सुमेरु के अग्रभाग में, पाण्डुक शिला का है स्थान। श्री आदि जिन का पहले ही, इन्द्र किए अभिषेक महान्।। कल्याणक का इच्छुक मैं भी, जिन प्रतिमा का स्थापन। अक्षत जल पुष्पों से पूजा, भाव सहित करता अर्चन॥११॥ ॐ हीं श्रीं क्लीं ऐं अर्ह श्री वर्णे प्रतिमास्थापनं करोमि स्वाहा।

अर्घ्य

निर्मल जल परिमल चंदन अरु, श्री को सुखकर ले अक्षत। श्रेष्ठ सुगन्धित पुष्प सु चरू शुभ, शुद्ध बनाए अमृतवत्।। सुर भवनों को करें प्रकाशित, ऐसे लेकर दीप महान। श्रेष्ठ सुगन्धित थूप और फल, से जिन का करते गुणगान॥13॥ ॐ हीं श्रीं क्लीं अर्ह श्री वर्णें जिनबिम्ब स्थापना करोमि अर्घ्य निर्व.

(चारों दिशा में चार कलश स्थापन मंत्र)

उत्तमोत्तम पल्लव से अर्चित, कहे गये जो महित महान्। स्वर्ण और चाँदी ताँबे अरु, रांगा निर्मित कलश महान्।। चार कलश चारों कोणों पर, जल पूरित ज्यों चउ सागर। ऐसा मान करूँ स्थापन, भिक्त से मैं अभ्यन्तर।।12।। ॐ हीं स्वस्त्ये चतुः कोणेषु चतुः कलश स्थापनं करोमि स्वाहा।

(जल से अभिषेक करें)

श्री जिनेन्द्र के चरण दूर से, नम्र हुए इन्द्रों के भाल। मुकुट मणी में लगे रत्न की, किरणच्छिव से धूसर लाल॥ जो प्रस्वेद ताप मल से हैं, मुक्त पूर्ण श्री जिन भगवान। भिक्त सहित प्रकृष्ट नीर से, मैं करता अभिषेक महान्॥१४॥ ॐ हीं श्रीं क्लीं ऐं अई वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमोऽहते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन जिनाभिषेचयामि स्वाहा।

दोहा जल गंधाक्षात पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय। जिनाभिषेक करके "विशद" पावन अर्घ्य चढ़ाय॥

ॐ हीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो जलेन अभिषेकान्ते अर्घ्यं नि. स्वाहा।

इक्षुरसाभिषेक

इन्द्र अञ्जली बद्ध शीश पर, रख के अपने दोनों हाथ। श्री जिनेन्द्र के चरण झुकाते, भिक्त भाव से अपना माथ॥ तुरत पेलकर इच्छूरस से, शीश पे देते हे प्रभु! धार। नाथ! आप हो करुणाकारी, करो सभी का प्रभु उद्धार॥15॥ ॐ हीं श्रीं क्लीं ऐं अर्ह वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमोऽहते भगवते श्रीमते पवित्रतरइक्षुरसेन जिनाभिषेचयामिति स्वाहा।

दोहा जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय। जिनाभिषेक करके विशद, पावन अर्घ्य चढ़ाय॥

ॐ हीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो इक्षु रसेन अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शर्करा रसाभिषेक

रजो विलाश कर्पूर पिष्ट शुभ, मधुर शर्करा रस शुभकार। मोक्षरमा के स्वामी जिन के, शीश पे देते पावनधार।। ॐ ह्रीं...शर्करा रसेनाभिसिंचयामि स्वाहा।

दोहा जल गंधाक्षात पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय। जिनाभिषेक करके "विशद" पावन अर्घ्य चढ़ाय।। ॐ हीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो शर्करा रसेन अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नारियल रसाभिषेक

स्वच्छ नारियल का जल शीतल, जो पवित्र है शुभ मनहार। लोकालोक प्रकाशी जिनका, न्हवन कराते मंगलकार।। ॐ हीं...नारियल रसेन जिनाभिसिंचयामि स्वाहा।

दोहा जल गंधाक्षात पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय। जिनाभिषेक करके "विशद" पावन अर्घ्य चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो नारियल रसेन अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दाड़िम रसाभिषेक

दाड़िम के दाने मोती सम, श्रेष्ठ पक्व लेकर मनहार। तुरत पेलकर रस ले पावन, न्हवन कराते अतिशयकार।। ॐ हीं...दाडि़म रसेनजिनाभिसिंचयामि स्वाहा।

दोहा जल गंधाक्षात पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय। जिनाभिषेक करके "विशद" पावन अर्घ्य चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो दाड़िम रसेन अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आम्र रसाभिषेक

पके आम का रस ले मीठा, शोभित होवे स्वर्ण समान। श्री जिनेन्द्र के शीश पे देते, जिसकी धारा महति महान।। ॐ हीं...आम्र रसेनाभिसिंचयामि स्वाहा।

दोहा जल गंधाक्षात पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय। जिनाभिषेक करके "विशद", पावन अर्घ्य चढ़ाय।। ॐ हीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो आम्र रसेन अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

फल रसाभिषेक

वीतराग जिन बिम्ब मनोहर, तीन लोक में मंगलकार। पक्व...के रस द्वारा, देते जिनके शीश पे धार।। ॐ हीं...रसेनाभिसिंचयामि स्वाहा।

दोहा जल गंधाक्षात पुष्प चरू, दीप धूप प्रग्ल लाय। जिनाभिषेक करके "विशद", पावन अर्घ्य चढ़ाय।। ॐ हीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो आम्र रसेन अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

घृताभिषेक

श्रेष्ठ वर्ण कंचन सम सुन्दर, देह प्रभा जिनकी शुभकार। अनुपमेय गुण रहे मनोहर, अर्हन्तों के मंगलकार।। नमस्कार कर शीश पे देते, हैं हम जिन के घृत की धार। परम सुगन्धी वाला होता, वातावरण श्रेष्ठ मनहार।।16।। ॐ हीं..... घृताभिषेकं करोमिति स्वाहा।

दोहा जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय। जिनाभिषेक करके विशद पावन अर्घ्य चढ़ाय।।

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो घृताभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दुग्धाभिषेक

पूर्ण चन्द्रमा की किरणों सम, धवल दुग्ध से देते धार। जिनके यश की गौरव गरिमा, फैल रही है अतिशयकार॥ कल्पवृक्ष समनाथ! आप हैं, भिव जीवों को फल दातार। अतः आपके चरण कमल में. वन्दन करते बारम्बार॥17॥

ॐ हीं.......दुग्धाभिषेकं करोमीति स्वाहा।

दोहा जल गंधाक्षात पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय। जिनाभिषेक करके विशद, पावन अर्घ्य चढ़ाय।। ॐ हीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो दुग्धाभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दध्याभिषेक

क्षीर सिन्धु से उठी तरंगें, फैन राशि सम आभावान। उससे सुन्दर दिध की धारा, शीश पे जिन के करें महान॥ मन वाञ्छित फल देने वाली, श्री जिनेन्द्र की भिक्त अपार। जिन चरणों में भक्त स्वतः ही, फल पाते हैं विस्मयकार॥18॥ ॐ हीं....... दध्याभिषेकं करोमीति स्वाहा।

दोहा जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय। जिनाभिषेक करके विशद पावन अर्घ्य चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो दध्याभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सर्वोषधिअभिषेक

दही दूध घृत इच्छूरस से, जिनवर का करके अभिषेक। उबटन करकालेय सुकुंकुम, सर्व मिलाकर करके एक।। मिश्रित कर उज्जवल सर्वोषिध, से धारा देते जिनशीश। शीश झुकाकर वन्दन करते, पाने को हम भी आशीष॥19॥ ॐ हीं....सर्वोषिध जिनाभिषेकं करोमीति स्वाहा।

दोहा जल गंधाक्षात पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय। जिनाभिषेक करके विशद, पावन अर्घ्य चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो सर्वोषधिअभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(चार कलश से अभिषेक करें)

इष्ट मनोरथ रहे सैकड़ों, उनकी शोभा धारे जीव। पूर्ण सुवर्ण कलशा लेकर शुभ, लाए अनुपम श्रेष्ठ अतीव॥ भव समुद्र के पार हेतु हैं, सेतु रूप त्रिभुवन स्वामी। करता हूँ अभिषेक भाव से, श्री जिनेन्द्र का शिवगामी॥20॥ ॐ हीं श्रीमंतं भगवंतं कृपालसंतं वृषभादि वर्धमानांतंचतुर्विंशति तीर्थंकरपरमदेवं आद्यानं आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखंडे....देशे....नाम......नगरे......एतद्........जिनचैत्यालये वीर नि. सं..... मासोत्तममासे....मासे....पक्षे....तिथौ.....वासरे प्रशस्त ग्रहलग्र होरायां मुनिआर्यिका-श्रावक- श्राविकाणाम् सकलकर्मक्षयार्थं चतुः कलशेन जलेनाभिषेकं करोमि स्वाहा। इति जलस्नपनम्।

चन्दन लेपन

तीन लोक में पुण्य प्रदायक, चन्दन को केसर में गार। करते हैं जिनिबम्बों में हम, श्रेष्ठ विलेपन मंगलकार।। निज गुण पाने का जागे अब, हे जिनेन्द्र मेरा सौभाग्य। नाथ! आपके गुण सौरभ से, विशद जगाए हम भी भाग्य॥21॥ ॐ हीं श्रीं क्लीं अर्ह जिनिबम्बोपरि चन्दन विलेपनं करोमि स्वाहा।

पुष्पवृष्टि

द्वादश योजन तक सुगन्ध जो, फैलाते हैं पुष्प पराग। पुष्प वृष्टि करते हैं पावन, जिन चरणों में धर अनुराग।। मोक्ष मार्ग की सिद्धी पाने, करें भाव से हे प्रभु! ध्यान। 'विशद' भाव से नाथ! आपका, करते हैं पावन गुणगान॥22॥ ॐ हीं श्रीं क्लीं अर्हं जिनबिम्बोपरि पुष्प वृष्टि करोमि स्वाहा।

(सुगंधित कलशाभिषेक करें)

जिनके शुभ आमोद के द्वारा, अन्तराल भी भली प्रकार। चतुर्दिशा का परम सुवासित, हो जाता है शुभ मनहार।। चार प्रकार कर्पूर बहुल शुभ, मिश्रित द्रव्य सुगन्धीवान। तीन लोक में पावन जिन का, करता मैं अभिषेक महान्॥23॥ ॐ हीं श्रीं क्लीं ऐं अर्ह वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन पूर्णसुगंधितकलाशाभिषेकने जिनाभिषेचयामि स्वाहा।

दोहा जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय। जिनाभिषेक करके विशद पावन अर्घ्य चढ़ाय॥ ॐ हीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो सुगंधित कलश अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ऋषिमण्डल यंत्राभिषेक

ऋषीमण्डल शुभ यंत्र का, करते शुभ अभिषेक। रोग शोक सब दूर हो, जागे विशद विवेक।।

ॐ हीं पवित्रतर जलेन ऋषिमण्डल यंत्र अभिषेकं करोमि इति स्वाहा।

मंगल आरती अवतरण

रखे पात्र में श्री फल उज्ज्वल, अक्षत पुष्प मनोहर दीप। इत्यादिक से सज्जित थाली, मंगलमय हम लाए समीप।। काम दाह के नाशक हे जिन, सर्व सुखों के तुम आलय। 'विशद' आरती करते हैं हम, आके अनुपम देवालय।। ॐ हीं श्रीं अर्हत्परमेष्ठिने नमः मंगल आरती अवतरणम् करोमि स्वाहा।

गंधोदक

जिनाभिषेक का गंधोदक शुभ, मुक्ति श्री के उदक समान। पुण्यांकुर उत्पन्न करे जो, सुर नरेन्द्र सब वैभववान।। सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण की, लता की वृद्धी का कारण। कीर्ति लक्ष्मी जय का साधक, 'विशद' रहा जो निस्कारण॥25॥ मस्तकोपरि गंधोदक धारयामि इति स्वाहा।

लघु शांतिधारा

वीतराग जगनेत्रम्, सर्वज्ञं सर्वदर्शकं विशद शांतिप्रदायकं स्यात् शांतिधारा करोम्यम्। ॐ नमः सिद्धेभ्यः। श्री वीतरागाय नमः। ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पार्श्वतीर्थंकराय द्वादशगणपिरविष्टिकाय, शुक्ल ध्यान पिवत्राय, सर्वज्ञाय, स्वयं भुवे, सिद्धाय, बुद्धाय, परमात्मने, परम सुखाय, त्रैलोक्य महीव्याप्ताय, अनन्त संसार चक्रपिरमर्दनाय, अनन्त दर्शनाय, अनन्त ज्ञानाय, अनन्त वीर्याय, अनन्त सुखाय, त्रैलोक्यवशंकराय, सत्यज्ञानाय, सत्यब्रह्मणे, धरणेन्द्र फणामंडल मण्डिताय, ऋष्यार्यिका-श्रावक-श्राविका प्रमुख चतुरसंघोपसर्ग विनाशनाय, घातिकर्म विनाशनाय, अघातिकर्म विनाशनाय, अपवायं अस्माकं... छिंद-छिंद भिंद-भिंद। मृत्यु छिंद-छिंद भिंद-भिंद। अतिकामं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। रतिकामं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। क्रोधं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। अग्निभयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वशत्रुं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वोपसर्गं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वविघ्नं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वभयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वराजभयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वचौरभयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वदुष्टभयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वम्गभयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वात्मचक्रभयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वपरमंत्र छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वशृल रोगं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वक्षय रोगं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वक्ष रोगं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वक्रूर रोगं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वनरमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वगजमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वाग्र्वमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वगोमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वमिहषमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वधान्यमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्ववक्षमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वगुल्ममारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वपत्रमारीं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वपष्पमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वफलमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वराष्ट्र मारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्व देशमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्व विषमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्ववेताल शाकिनी छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्ववेदनीयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वमोहनीयं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद। **सर्वकर्माष्टकं** छिंद-छिंद भिंद-भिंद।

ॐ सुदर्शन-महाराज-मम-चक्र विक्रम-तेजो-बल शौर्य-वीर्य शान्तिं कुरु-कुर। सर्व जनानन्दनं कुरु-कुर। सर्व भव्यानंदनं कुरु-कुर। सर्व गाकुलानन्दनं कुरु-कुर। सर्व ग्राम नगर खेट कर्वट मटंब पत्तन द्रोणमुख संवाहनन्दनं कुरु-कुर। सर्व लोकानन्दनं कुरु-कुर। सर्व देशानंदनं कुरु-कुर। सर्व यजमानन्दनं कुरु-कुर। सर्व दुःख हन-हन, दह-दह, पच-पच, कुट-कुट, शीघ्रं-शीघ्रं।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याधि-व्यसन-वर्जितं। अभयं क्षेम-मारोग्यं स्वस्ति-रस्तु विधीयते॥ श्री शांति-मस्तु! कुल-गोत्र-धन-धान्यं सदास्तु। चन्द्रप्रभ-वासुपूज्य-मल्लि-वर्द्धमान-पुष्पदंत-शीतल-मुनिसुव्रतस्त-नेमिनाथ-पार्श्वनाथ-इत्येभ्यो नम:।

इत्यनेन मंत्रेण नवग्रहाणां शान्त्यर्थं गंधोदक धारा-वर्षणम्।

शांति मंत्र-ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेष दोष कल्मषाय दिव्य तेजो मूर्तये नमः श्री शान्तिनाथ शान्ति कराय सर्व विघ्न प्रणाशनाय सर्व रोगापमृत्यु विनाशनाय सर्व पर कृच्छुद्रोपद्र विनाशनाय सर्व क्षामडामर विघ्न विनाशनाय ॐ हां हीं हूं हौं हः अ सि आ उ सा नमः मम सर्व देशस्य सर्व राष्ट्रस्य सर्व संघस्य तथैव सर्व शान्ति तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु। शांति शिरोधृत जिनेश्वर शासनानां। शांतिः निरन्तर तपोभव भावितानां। शांतिः कषाय जय जृम्भित वैभवानां। शांतिः स्वभाव महिमान मुपागतानां॥

संपूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्र सामान्य तपोधनानां। देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिं भगवान जिनेन्द्रः॥ अज्ञान महातम के कारण, हम व्यर्थ कर्म कर लेते हैं। अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, प्रभु जल की धारा देते हैं॥

अर्घ-जल गंधाक्षत पुष्पचरु फल, दीप धूप का अर्घ्य बनाय। 'विशद 'भाव से शांति धार दे, श्री जिनपद में दिया चढ़ाय।। ॐ हीं श्री क्लीं त्रिभुवनपूर्व शान्तिधार् करोमि नमोऽर्हते अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

सर्व आचार्यों का अर्घ्य

आदि सिन्धु शांती सागर जी, महावीर कीर्ति पद वन्दन। वीर सिन्धु शिव धर्म विमल पद, विद्यानन्द पद करूँ नमन॥ भरत सिन्धु सन्मित सागर जी, पुष्पदन्त विद्यासागर। विराग सिन्धु कुन्थु सागर पद, विशद नमन मेरा सादर॥ ॐ हूँ आचार्य श्री आदि सागर जी शांतिसागर जी परंपरागत सर्व आचार्य परमेष्ठी चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प.पू. आचार्य गुरुवर श्री विशद सागर जी का अर्घ्य पिच्छी कमण्डलधारी गुरुवर, केशलोंच जो करते हैं। छत्तिस मूलगुणों के धारी, बाईस परीषह सहते हैं। आत्म ध्यान जो करते रहते, भेद ज्ञान प्रगटाते हैं। पूजा विधान अनेकों रचकर, भक्तों से करवाते हैं।। विशाल हृदय के धारी गुरुवर, सबके संकट हरते हैं। हाथ जोड़कर विशद गुरु को, नमन सभी हम करते हैं।

ॐ ह्रूं साहित्य रत्नाकर क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशद सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिषेक समय की आरती

(तर्ज-आनन्द अपार है)

जिनवर का दरबार है, भक्ती अपरम्पार है। जिनबिम्बों की आज यहाँ पर, होती जय-जयकार है। टेक।। दीप जलाकर आरित लाए, जिनवर तुमरे द्वार जी। भाव सिहत हम गुण गाते हैं, हो जाए उद्धार जी।। 1। जिनवर... मिथ्या मोह कषायों के वश, भव सागर भटकाए हैं। होकर के असहाय प्रभू जी, द्वार आपके आए हैं। 2। जिनवर... शांती पाने श्री जिनवर का, हमने न्हवन कराया जी। तारण तरण जानकर तुमको, आज शरण में आया जी।। 3। जिनवर... हम भी आज शरण में आकर, भक्ती से गुण गाते हैं। भव्य जीव जो गुण गाते वह, अजर अमर पद पाते हैं। 4। जिनवर... नैय्या पार लगा दो भगवन्, तव चरणों सिरनाते हैं। 'विशद' मोक्ष पद पाने हेतू, सादर शीश झुकाते हैं।। 5। जिनवर...

लघु विनय पाठ-1 - दोहा

पूजा विधि से पूर्व यह, पढ़ें विनय से पाठ। धन्य जिनेश्वर देवजी, कर्म नशाए आठ॥।॥ शिव विनता के ईश तुम, पाए केवल ज्ञान। अनन्त चतुष्टय धारते, देते शिव सोपान॥२॥ पीड़ा हारी लोक में, भव-दिध नाशनहार। ज्ञायक हो त्रयलोक के, शिवपद के दातार॥३॥ धर्मामृत दायक प्रभो!, तुम हो एक जिनेन्द्र। चरण कमल में आपके, झुकते विनत शतेन्द्र।।4।। भविजन को भविसन्धु में, एक आप आधार। कर्म बन्ध का जीव के, करने वाले क्षार।।5।। चरण कमल तब पूजते, विघ्न रोग हों नाश। भवि जीवों को मोक्ष पथ, करते आप प्रकाश।।6॥ यह जग स्वारथ से भरा, सदा बढ़ाए राग। दर्श ज्ञान दे आपका, जग को विशद विराग।।7॥ एक शरण तुम लोक में, करते भव से पार। अतः भक्त बन के प्रभो!, आया तुमरे द्वार।।8॥

मंगल अर्हत् सिद्ध जिन, आचार्योपाध्याय संत। धर्मागम की अर्चना, से हो भव का अंत।।९।। मंगल जिनगृह बिम्ब जिन, भक्ती के आधार। जिनकी अर्चा कर मिले, मोक्ष महल का द्वार।।10॥ ।।इत्याशीर्वाद: पृष्पांजलिं क्षिपेत।।

मंगल पाठ

अथ पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय। नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु। णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं। ॐ हीं अनादिमूल मंत्रेभ्योनमः। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केविलपण्णत्तो, धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहन्ता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केविलपण्णत्तो, धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि शरणं पळ्जामि, अरिहंते शरणं पळ्जामि, सिद्धे शरणं पळ्जामि, साहू शरणं पळ्जामि, केविलपण्णत्तं, धम्मं शरणं पळ्जामि। ॐ नमोऽहंते स्वाहा। (पुष्पांजिलं क्षिपामि)

मंगल विधान

शुद्धाशुद्ध अवस्था में कोई, णमोकार को ध्याये। पूर्ण अमंगल नशे जीव का, मंगलमय हो जाए। सब पापों का नाशी है जो, मंगल प्रथम कहाए। विघ्न प्रलय विषनिर्विष शाकिनि, बाधा ना रह पाए।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अर्घ्यावली

जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल साथ। अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले, पूज रहे जिन नाथ॥

ॐ हीं श्री भगवतो गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान निर्वाण पंच कल्याणेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।।।।

ॐ हीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधूभ्यो अर्घ्य निर्व. स्वाहा।।2।। ॐ हीं श्री भगविज्जिन अष्टाधिक सहस्त्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।3।। ॐ हीं श्री द्वादशांगवाणी प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग नम: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।4।।

ॐ हीं ढाईद्वीप स्थित त्रिऊन नव कोटि मुनि चरणकमलेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।5।।

"पूजा प्रतिज्ञा पाठ"

अनेकांत स्याद्वाद के धारी, अनन्त चतुष्टय विद्यावान। मूल संघ में श्रद्धालू जन, का करने वाले कल्याण। तीन लोक के ज्ञाता दृष्टा, जग मंगलकारी भगवान। भाव शुद्धि पाने हे स्वामी!, करता हूँ प्रभु का गुणगान॥।॥ निज स्वभाव विभाव प्रकाशक, श्री जिनेन्द्र हैं क्षेम निधान। तीन लोकवर्ती द्रव्यों के, विस्तृत ज्ञानी हे भगवान! हे अर्हन्त! अष्ट द्रव्यों का, पाया मैंने आलम्बन। होकर के एकाग्रचित्त मैं, पुण्यादिक का करूँ हवन॥२॥ ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञायै जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलि क्षिपामि।

"स्वस्ति मंगल पाठ"

ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमित पद्म सुपार्श्व जिनेश। चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजूँ तीर्थेश।। विमलानन्त धर्म शांती जिन, कुन्थु अरह मल्ली दें श्रेय। मुनिसुव्रत निम नेमि पार्श्व प्रभु, वीर के पद में स्वस्ति करेय॥ इति श्री चतुर्विशति तीर्थंकर स्वस्ति मंगल विधानं पृष्यांजलिं क्षिपामि।

"परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ"

ऋषिवर ज्ञान ध्यान तप करके, हो जाते हैं ऋद्धीवान।
मूलभेद हैं आठ ऋद्धि के, चौंसठ उत्तर भेद महान।।
बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, जिनको पाके ऋद्धीवान।
निस्पृह होकर करें साधना, 'विशद' करें स्व पर कल्याण॥1॥
ऋद्धि विक्रिया ग्यारह भेदों, वाले साधू ऋद्धीवान।
नौं भेदों युत चारण ऋद्धी, धारी साधू रहे महान॥
तप ऋद्धी के भेद सात हैं, तप करते साधू गुणवान।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारी साधू रहे प्रधान॥2॥
भेद आठ औषधि ऋद्धि के, जिनके धारी सर्व ऋशीष।
रस ऋद्धी के भेद कहे छह, रसास्वाद शुभ पाए मुनीश॥
ऋद्धि अक्षीण महानस एवं, ऋद्धि महालय धर ऋषिराज।
जिनकी अर्चा कर हो जाते, सफल सभी के सारे काज॥3॥

।। इति परमर्षि-स्वस्ति-मंगल-विधानं।। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

श्री देव शास्त्र गुरु पूजन

स्थापना (दोहा)

देव-शास्त्र-गुरु पद नमन, विद्यमान तीर्थेश। सिद्ध प्रभु निर्वाण भू, पूज रहे अवशेष॥

ॐ हीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ हीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं। ॐ हीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह! अत्र मम् सिन्तिहतो भव-भव वषट् सिन्धिकरणम्। (चाल छन्द)

जल के यह कलश भराए, त्रय रोग नशाने आए। हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥1॥ ॐ हीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा। शुभ गंध बनाकर लाए, भवताप नशाने आए। हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥2॥ ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व.स्वाहा। अक्षत हम यहाँ चढ़ाएँ, अक्षय पदवी शुभ पाएँ हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥३॥ ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वस्वाहा। सुरभित ये पुष्प चढ़ाएँ, रुज काम से मुक्ती पाएँ। हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥४॥ ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा। पावन नैवेद्य चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ। हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥५॥ ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा। घृत का ये दीप जलाएँ, अज्ञान से मुक्ती पाएँ। हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥।।। ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा। अग्नी में धूप जलाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ। हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥७॥ ॐ हीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा। ताजे फल यहाँ चढ़ाएँ, शुभ मोक्ष महाफल पाएँ। हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥।। ॐ हीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा। पावन ये अर्घ्य चढ़ाएँ, हम पद अनर्घ्य प्रगटाएँ। हम देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा। ॐ हीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा। दोहा- शांती धारा कर मिले, मन में शांति अपार। अतः भाव से आज हम, देते शांती धार॥

।। शान्तये शांतिधारा ।।

दोहा- पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, लिए पुष्प यह हाथ। देव शास्त्र गुरु पद युगल, झुका रहे हम माथ॥ ॥ पुष्पाञ्जलि क्षिपेत् ॥

"अर्घ्यावली"

दोष अठारह से रहित प्रभु, छियालिस गुणवान। देव श्री अर्हन्त का, करते हम गुणगान॥।।। ॐ हीं षट् चत्त्वारिंशत गुण विभूषित अष्टादश दोष रहित श्री अरिहंत सिद्ध जिनेन्द्राय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिन के सर्वांग से, खिरे दिव्य ध्विन श्रेष्ठ। द्वादशांग मय पूजते, लेकर अर्घ्य यथेष्ठ॥२॥ ॐ हीं श्रीजिन मुखोद्भूत सरस्वती देव्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विषयाशा त्यागी रहे, ज्ञान ध्यान तपवान। संगारम्भ विहीन पद, करें विशद गुणगान॥३॥ ॐ हीं श्री आचार्य उपाध्याय साधु परमेष्ठी चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- देव-शास्त्र-गुरु के चरण, वन्दन करें त्रिकाल। 'विशद' भाव से आज हम, गाते हैं जयमाल॥

(तामरस छंद)

जय-जय-जय अरहंत नमस्ते, मुक्ति वधू के कंत नमस्ते। कर्म घातिया नाश नमस्ते, केवलज्ञान प्रकाश नमस्ते। जगती पित जगदीश नमस्ते, सिद्ध शिला के ईश नमस्ते। वीतराग जिनदेव नमस्ते, चरणों विशद सदैव नमस्ते। विद्यमान तीर्थेश नमस्ते, श्री जिनेन्द्र अवशेष नमस्ते। जिनवाणी ॐकार नमस्ते, जैनागम शुभकार नमस्ते। वीतराग जिन संत नमस्ते, सर्वसाधु निर्ग्रन्थ नमस्ते। अकृत्रिम जिनबिम्ब नमस्ते, कृत्रिम जिन प्रतिबिम्ब नमस्ते। दर्श ज्ञान चारित्र नमस्ते, धर्म क्षमादि पवित्र नमस्ते। तीर्थ क्षेत्र निर्वाण नमस्ते, पावन पञ्चकल्याण नमस्ते। अतिशय क्षेत्र विशाल नमस्ते, जिन तीर्थेश त्रिकाल नमस्ते। शाश्वत तीरथराज नमस्ते, 'विशद' पूजते आज नमस्ते। दोहा- अर्हतादि नव देवता, जिनवाणी जिन संत।

पूज रहे हम भाव से, पाने भव का अंत।।
ॐ हीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- देव-शास्त्र-गुरु पूजते, भाव सहित जो लोग। ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य पा, पावें शिव का योग॥

।। इत्याशीर्वाद: (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत) ।।

समुच्चय अर्घ्य

अष्टम वसुधा पाने को यह, अर्घ्य बनाकर लाए हैं। अष्टगुणों की सिद्धी पाने, तव चरणों में आए हैं।। णमोकार नन्दीश्वर मेरू, सोलह कारण जिन तीर्थेश। सहस्त्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष।। देव शास्त्र गुरु धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस। कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश।।।।।

35 हीं अर्ह मूलनायक...सिहत पंचकल्याणक पदालंकृत सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सोलहकारण-रत्नत्रय-दशधर्म, पंच मेरू-नन्दीश्वर त्रिलोक सम्बन्धी समस्त कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, सिद्ध क्षेत्र अतिशय क्षेत्र तीस चौबीसी, विद्यमान बीस तीर्थंकर तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टापद तीर्थ जिनालय स्थित समुच्चय पूजा स्थापना

अष्टापद से शिव पद पाए, ऋषभ देव का मुक्ती धाम। जिसकी प्रतिकृति बनी यहाँ पर, जिसका है अष्टापद नाम॥ लाल वर्ण की पावन प्रतिमा, भरत बाहुबली भी हैं साथ। मानस्तंभ शोभता आगे, झुका रहे हैं अपना माथ।। दोहा- सहस्रकूट पावन रहा, हैं चौबीस भगवान।

भिक्त भाव से आज हम, करते हैं आह्वान॥ ॐ हीं अष्टापद तीर्थ स्थित श्री आदिनाथ भरत-बाहुबली पार्श्वनाथ सहस्रकूट मानस्तंभ विराजित सर्व जिन बिम्ब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं। अत्र मम सिन्निहितो भव भव वषट् सिन्निधिकरणं।

(वीर छन्द)

भव सिन्धू की कर्म लहर से, भव में ना भटकाएँ हम। चरण कमल में जल अर्पण कर, जन्म जरादि नशाएँ हम॥ तीर्थ क्षेत्र अष्टापद पावन, जिसकी महिमा गाएँ हम। जिन चरणों में भिक्त भाव से, सादर शीश झुकाए हम॥१॥ ॐ हीं अष्टापद तीर्थ जिनालय स्थित सर्व जिनबिम्बेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधादिक जो रही कषाएँ, उनसे मुक्ती पाएँ हम। सुरभित चंदन चर्चित करके, भव सन्ताप नशाएँ हम।। तीर्थ क्षेत्र अष्टापद पावन, जिसकी महिमा गाएँ हम। जिन चरणों में भिक्त भाव से, सादर शीश झुकाए हम।।2॥ ॐ हीं अष्टापद तीर्थ जिनालय स्थित सर्व जिनिबम्बेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा। जागे है सौभाग्य हमारे, तव दर्शन नित पाएँ हम।
अक्षत धवल चढ़ाकर चरणों, अक्षय पदवी पाए हम।।
तीर्थ क्षेत्र अष्टापद पावन, जिसकी महिमा गाएँ हम।
जिन चरणों में भिक्त भाव से, सादर शीश झुकाए हम॥3॥
ॐ हीं अष्टापद तीर्थ जिनालय स्थित सर्व जिनिबम्बेभ्यो अक्षयपद
प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम जयी हे नाथ! आपकी, अतिशय महिमा गाएँ हम। जल भूमिज षट् ऋतु के सुरभित, चरणों पुष्प चढ़ाएँ हम॥ तीर्थ क्षेत्र अष्टापद पावन, जिसकी महिमा गाएँ हम। जिन चरणों में भिक्त भाव से, सादर शीश झुकाए हम।।४॥ ॐ हीं अष्टापद तीर्थ जिनालय स्थित सर्व जिनबिम्बेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

षट् रस व्यंजन से अर्चाकर, झूमें नाचे गाएँ हम। क्षुधा शांत करने को स्वामी, तव चरणों में आए हम।। तीर्थ क्षेत्र अष्टापद पावन, जिसकी महिमा गाएँ हम। जिन चरणों में भिक्त भाव से, सादर शीश झुकाए हम॥५॥ ॐ हीं अष्टापद तीर्थ जिनालय स्थित सर्व जिनिबम्बेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर ने घेरा हमको, उसको अब विनशाएँ हम।
रत्नमयी शुभ घृत का दीपक, चरणों नाथ जलाएँ हम।।
तीर्थ क्षेत्र अष्टापद पावन, जिसकी महिमा गाएँ हम।
जिन चरणों में भिक्त भाव से, सादर शीश झुकाए हम।।6॥
ॐ हीं अष्टापद तीर्थ जिनालय स्थित सर्व जिनबिम्बेभ्यो मोहांधकार
विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म ने हमें सताया, उनसे मुक्ती पाएँ हम। मुक्ति रमा को पाने सुरभित, अग्नि में धूप जलाएँ हम॥ तीर्थ क्षेत्र अष्टापद पावन, जिसकी महिमा गाएँ हम। जिन चरणों में भिक्त भाव से, सादर शीश झुकाए हम॥७॥ ॐ हीं अष्टापद तीर्थ जिनालय स्थित सर्व जिनबिम्बेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धृपं निर्वपामीति स्वाहा।

छह ऋतुओं के सरस मनोहर, फल यह मधुर चढ़ाएँ हम। भाव सहित हे नाथ! आपकी, अतिशय महिमा गाएँ हम। तीर्थ क्षेत्र अष्टापद पावन, जिसकी महिमा गाएँ हम। जिन चरणों में भिक्त भाव से, सादर शीश झुकाए हम॥॥॥ ॐ हीं अष्टापद तीर्थ जिनालय स्थित सर्व जिनिबम्बेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पृथक-पृथक इन अष्ट द्रव्य का, पावन अर्घ्य बनाएँ हम। विशद भाव से हर्षित होकर, जिन पद आज चढ़ाएँ हम। तीर्थ क्षेत्र अष्टापद पावन, जिसकी महिमा गाएँ हम। जिन चरणों में भिक्त भाव से, सादर शीश झुकाए हम॥९॥ ॐ हीं अष्टापद तीर्थ जिनालय स्थित सर्व जिनिबम्बेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- नाथ हमें अब दीजिए, पावन यह वरदान। पावन संयम धारकर, बन जाएँ भगवान॥

।। शान्तये शान्तिधारा ।।

दोहा- नाथ आपके नाम का, करते सब जयकार। पुष्पांजलि करते विशद, पाने भव दिध पार॥

।। दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

पंच कल्याणक के अर्घ्य दोहा

तीर्थंकर पद के धनी, पाएँ गर्भ कल्याण। अर्चा करे जो भाव से, पावे निज स्थान॥1॥ ॐ ह्रीं गर्भकल्याणक प्राप्त मूलनायक श्री....सिहत सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमा जन्म कल्याण की, होती अपरम्पार।
पूजा कर सुर नर मुनी, करे आत्म उद्धार॥२॥
ॐ हीं जन्मकल्याणक प्राप्त मूलनायक श्री....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो
अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

तप कल्याणक प्राप्त कर, करें साधना घोर। कर्म काठ को नाशकर, बढ़ें मुक्ति की ओर॥३॥ ॐ हीं तपकल्याणक प्राप्त मूलनायक श्री....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रगटाते निज ध्यान कर, जिनवर केवलज्ञान। स्व-पर उपकारी बने, तीर्थंकर भगवान॥४॥ ॐ हीं केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त मूलनायक श्री....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्म विनाश कर, पाते पद निर्वाण। भव्य जीव इस लोक में, करें विशद गुणगान॥५॥ ॐ हीं मोक्षकल्याणक प्राप्त मूलनायक श्री....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- अष्टापद शुभ तीर्थ की, महिमा रही महान। जयमाला गाते यहाँ, करते हैं गुणगान।। (टप्पा चाल)

> प्रथम तीर्थंकर इस युग के हैं, आदिनाथ भाई। षट् कर्मों का किए प्रवर्तन, भविजन सुखदाई॥ जिनेश्वर पूजो हो भाई॥टेक॥

कर्म घातियाँ नाश किए प्रभु, विशव ज्ञान पाई। कर्म नाशकर अष्टापद से, पाए शिव भाई॥ जिनेश्वर पूजो हो भाई॥1॥

चक्री भरत ने त्रैकालिक शुभ, चौबीसी भाई। रत्नमयी देवों से रक्षित, पावन बनवाई। जिनेश्वर पुजो हो भाई॥2॥

ब्रह्मचारी श्री धर्मचन्द के, भाव हुए भाई। अष्टापद रचना बनवाएँ, कृत्रिम अतिशायी।। जिनेश्वर पूजो हो भाई॥3॥

भरत बाहुबली आदिनाथ जी, मध्य रहे भाई। चौवीसी है धवल रंग की, जगत पूज्य गाई॥ जिनेश्वर पूजो हो भाई॥४॥

सहस कूट की पावन रचना, अतिशय बनवाई। पार्श्वनाथ चैत्यालय आगे, मानस्तंभ भाई।। जिनेश्वर पुजो हो भाई॥5॥

रत्नमयी प्रतिमाएँ पावन, हैं अनेक भाई। जिनबिम्बों की अर्चा जग में, विशद मोक्ष दाई॥ जिनेश्वर पूजो हों भाई॥६॥

दोहा- अष्टापद शुभ तीर्थ का, किया यहाँ गुणगान। ऋद्धि-सिद्धि समृद्धि हो, करते चरण प्रणाम॥

35 हीं अष्टापद तीर्थ जिनालय स्थित बड़े बाबा श्री आदिनाथ सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। दोहा- कर्म श्रृंखला नाश कर, हुए मोक्ष के ईश। जिनके चरणों में विशद, झका रहे हम शीश।।

(इत्याशीर्वाद)

अष्टापद तीर्थ स्थित ऋषभदेव पूजा

"स्थापना"

ऋषभदेव जी शिव पद पाए, तीर्थ रहा अष्टापद धाम। जिसकी प्रतिकृति बनी यहाँ पर, जिसका है अष्टापद नाम॥ लाल वर्ण की पावन प्रतिमा, जटाजूट धारी भगवान। उच्चादर्श उच्च वेदी पर, जग में जिनकी ऊँची शान॥ दोहा- ऋषभ चिन्ह से शोभते, ऋषभनाथ भगवान।

विशद हृदय में आपका, करते हम आह्वान॥ ॐ हीं अष्टापद तीर्थ स्थित बड़े बाबा श्री ऋषभदेव जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं।

अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छन्द)

जल पिया अनादी से हमने, पर तृषा शान्त न कर पाए। यह निर्मल नीर चढ़ाकर के, मिथ्या मल धोने हम आए॥ हम अष्टापद के बड़े बाबा, श्री ऋषभदेव को ध्याते हैं। अब मेरे सारे दुख दर्द हरो, हम सादर शीश झुकाते हैं॥1॥ ॐ हीं श्रीं क्लीं ऐं अर्ह नमः बड़े बाबा श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम भाँति-भाँति के चन्दन से, तन अपना सतत् सजाए हैं। जिन चरणों चन्दन चर्चित कर, भव ताप नशाने आए हैं॥ हम अष्टापद के बड़े बाबा, श्री ऋषभदेव को ध्याते हैं। अब मेरे सारे दुख दर्द हरो, हम सादर शीश झुकाते हैं।।2॥ ॐ हीं श्रीं क्लीं ऐं अर्ह नमः बड़े बाबा श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

निज शक्ति भूल दर-दर भटके, शास्वत पद को विसराए हैं। अब अक्षय अखण्ड सुपद पाने, प्रभु तव चरणों में आए हैं॥ हम अष्टापद के बड़े बाबा, श्री ऋषभदेव को ध्याते हैं। अब मेरे सारे दुख दर्द हरो, हम सादर शीश झुकाते हैं॥३॥ ॐ हीं श्रीं क्लीं ऐं अर्ह नम: बड़े बाबा श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

मन्मथ माया में लीन रहे, ज्ञानामृत रस ना चख पाए। अब स्याद्वाद के पुष्प चरण, हे नाथ! चढ़ाने को लाए॥ हम अष्टापद के बड़े बाबा, श्री ऋषभदेव को ध्याते हैं। अब मेरे सारे दुख दर्द हरो, हम सादर शीश झुकाते हैं।।4॥ ॐ हीं श्रीं क्लीं ऐं अर्ह नम: बड़े बाबा श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वहा।

हम ज्ञानानन्द स्वभावी हो, आशा तृष्णा में भटकाए। नैवेद्य सरस यह चढ़ा रहे, निज समरस पाने को आए॥ हम अष्टापद के बड़े बाबा, श्री ऋषभदेव को ध्याते हैं। अब मेरे सारे दुख दर्द हरो, हम सादर शीश झुकाते हैं॥5॥ ॐ हीं श्रीं क्लीं ऐं अर्ह नम: बड़े बाबा श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम ज्ञाता दृष्टा होकर भी, मिथ्यात्व मोह में उलझाए। अब सम्यक् ज्ञान प्रकट करने, यह दीप जला करके लाए॥ हम अष्टापद के बड़े बाबा, श्री ऋषभदेव को ध्याते हैं। अब मेरे सारे दुख दर्द हरो, हम सादर शीश झुकाते हैं।।6॥ ॐ हीं श्रीं क्लीं ऐं अर्ह नम: बड़े बाबा श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम धूप सुगन्धी में अटके, निज ज्ञान धूप ना प्रगटाए। अब धूप जलाकर दर्श ज्ञान, सुख वीर्य प्रकट करने आए॥ हम अष्टापद के बड़े बाबा, श्री ऋषभदेव को ध्याते हैं। अब मेरे सारे दुख दर्द हरो, हम सादर शीश झुकाते हैं॥७॥ ॐ हीं श्रीं क्लीं ऐं अर्ह नम: बड़े बाबा श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा। स्वादिष्ट फलों के रागी हो, कर्मों के बन्ध बढ़ाए हैं। फल ताजे यहाँ चढ़ाकर के, मुक्ती फल पाने आए हैं।। हम अष्टापद के बड़े बाबा, श्री ऋषभदेव को ध्याते हैं। अब मेरे सारे दुख दर्द हरो, हम सादर शीश झुकाते हैं।।8।। ॐ हीं श्रीं क्लीं ऐं अर्ह नमः बड़े बाबा श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम द्रव्य दृष्टि से शुद्ध रहे, निज का स्वरूप ना पाए हैं। जो विशद स्वरूप रहा मेरा, हम वह प्रगटाने आए हैं।। हम अष्टापद के बड़े बाबा, श्री ऋषभदेव को ध्याते हैं। अब मेरे सारे दुख दर्द हरो, हम सादर शीश झुकाते हैं।। ७॥ ॐ हीं श्रीं क्लीं ऐं अर्ह नमः बड़े बाबा श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय अन्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांती धारा से मिले, पाने अनर्घ्य पद आए। भव्य जीव जिन भिक्ति कर, पाएँ भव से पार॥

।। शान्तये शान्तिधारा ।।

दोहा- पुष्पित पुष्पों से भरे, लाए अनुपम थाल। पुष्पांजलि करते विशद, पाने सुपद त्रिकाल॥ (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

पंचकल्याणक के अर्घ्य

दोहा- द्वितीया कृष्ण आषाढ़ की, आदिनाथ भगवान सर्वार्थिसिद्धि से चय किए, पाए गर्भ कल्याण॥1॥

ॐ हीं आषाढ़ कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्तश्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत कृष्ण नौमी प्रभू, पाए जन्म कल्याण। शत् इन्द्रों ने न्हवन कर, किया प्रभू गुणगान॥२॥ ॐ हीं चैत्र कृष्णा नवम्यां जन्मकल्याणक प्राप्तश्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। नील परी की मृत्यु लख, धरे आप वैराग्य। चैत कृष्ण नोमी तिथी, छोड़ चले सब राग॥३॥ ॐ हीं चैत्र कृष्णा नवम्यां तपकल्याणक प्राप्तश्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

चार घातिया नाशकर, पाए केवल ज्ञान। फाल्गुन विद एकादशी, जग में हुई महान।।४॥ ॐ हीं फाल्गुन कृष्ण एकादशी केवलज्ञान कल्याणक प्राप्तश्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ कृष्ण की चतुर्दशी, कीन्हें कर्म विनाश। मोक्ष कल्याणक प्राप्त कर, किए सिद्ध पद वास॥५॥ ॐ हीं माघ कृष्णा चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्तश्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- अष्टापद शुभ तीर्थ की, महिमा बड़ी विशाल। महिमा गाने आपकी, गाते हैं जयमाल।। बेसरी छन्द

काल अनादी यह कहलाया, इसका अंत कहीं न पाया। जीव अनंतानंत कहे हैं, भव सागर में दु:ख सहे हैं॥१॥ जन्म मरण पाते दुखदायी, रागद्वेष के कारण भाई। कर्म बंध होता है भारी, जिससे है संसार दुखारी॥१॥ भव्याभव्य कहे हैं प्राणी, ऐसा कहती है जिनवाणी। भव्य मोक्ष की शक्ति पाते, इतर सदा संसार भ्रमाते॥३॥ सम्यक् श्रद्धा जिनके जागे, मोक्ष मार्ग में वे ही लागे। मोक्षमार्ग रत्नत्रय जानो, वीतरागता भी पहिचानो॥४॥ जो हैं वीतरागता धारी, वह हो जाते हैं अविकारी। निज आतम का ध्यान लगाते, जिससे कर्म निर्जरा पाते॥५॥ सर्व कर्म नशते ही प्राणी, पा लेते हैं मुक्ति रानी। इन्द्र सभी मिलकर के आते, मोक्षकल्याणक वहाँ मनाते॥६॥ अष्टद्रव्य से पूजा करते, अपना कोष पुण्य से भरते।

भिक्त करते विस्मयकारी, सर्व जगत में मंगलकारी॥७॥ अग्नि कुमार देव भी आते, भिक्त से नख केश जलाते। जयकारा करते है भारी, प्रभु होते हैं अतिशयकारी॥८॥ आदिम तीर्थंकर कहलाए, धर्म प्रवर्तन आप कराए। स्वयं बोध हो संयम पाए, निज आतम का ध्यान लगाए॥९॥ कर्म घातिया आप नशाएँ, पावन केवल ज्ञान जगाए। दिव्य देशना आप सुनाए, इस जग को सन्मार्क दिखाए॥१०॥ योग रोध चौदह दिन पाएँ, अष्टापद से मोक्ष सिधाए। सुर नर मुनि सब महिमा गाए, भिक्त से पद पूज रचाए॥११॥ दोहा- अर्चा को प्रभु आपकी, हुए आज वाचाल।

आदिनाथ भगवान की, गाई यहाँ जयमाल।। ॐ हीं अष्टापद तीर्थ स्थित बड़े बाबा श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- रत्नत्रय को धारकर, अपनाए शिव पंथ। यही भावना है 'विशद', पाएँ ज्ञान अनन्त॥ ॥ इत्याशीर्वाद ॥

समुच्चय महार्घ्य

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु के चरण नमन। जैनागम जिन चैत्य जिनालय, जैन धर्म को शत् वन्दन॥ सोलह कारण धर्म क्षमादिक, रत्नत्रय चौबिस तीर्थेश। अतिशय सिद्धक्षेत्र नन्दीश्वर, की अर्चा हम करें विशेष॥

दोहा- अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, 'विशद' भाव के साथ। चढ़ा रहे त्रययोग से, झुका चरण में माथ॥

ॐ हीं श्री अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु, सरस्वती देव्यै, सोलहकारण भावना, दशलक्षण धर्म, रत्नत्रय धर्म, त्रिलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, नन्दीश्वर, पंचमेरु सम्बन्धी चैत्य-चैत्यालय, कैलाश गिरि, सम्मेद शिखर, गिरनार, चम्पापुर, पावापुर आदि निर्वाण क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, तीस चौबीसी, तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो समुच्च महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पुष्पक्षेपण करते हुए शांति पाठ बोले)

शांतिपाठ

शांतिनाथ शांति के दाता, भिव जीवों के भाग्य विधाता। परम शांत मुद्रा जो धारे, जग जीवों के तारण हारे॥ शरण आपकी जो भी आते, वे अपने सौभाग्य जगाते। शांतिपाठ पूजा कर गाएँ, पुष्पांजिल कर शांति जगाएँ॥ जिन पद शांती धार कराएँ, जीवन में सुख शांति पाएँ। जीवों को सुख शांति प्रदायी, धर्म सुधामृत के वरदायी॥ शांतिनाथ दुख दारिद्र नाशी, सम्यक्दर्शन ज्ञान प्रकाशी। राजा प्रजा भक्त नर-नारी, भिक्त करें सब मंगलकारी॥ जैन धर्म जिन आगम ध्यायें, परमेष्ठी पद शीश झुकाएँ। श्री जिन चैत्य जिनालय भाई, विशद बनें सब शांति प्रदायि॥

(शान्तयेशांतिधारा-3)

(दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्) (कायोत्सर्ग करें)

विसर्जन पाठ

भूल हुई हो जो कोई, जान के या अन्जान। बोधि हीन मैं हूँ विशद, क्षमा करो भगवान॥ ज्ञान ध्यान शुभ आचरण, से भी हूँ मैं हीन। सर्व दोष का नाश हो, शुभाचरण हो लीन॥ पूजा अर्चा में यहाँ, आए जो भी देव। करूँ विसर्जन भाव से, क्षमा करो जिन देव॥

> ।।इत्याशीर्वाद: पुष्पांजलिं क्षिपेत्।। (ठोने में पुष्पक्षेपण करें)

आशिका लेने का मंत्र

पूजा कर आराध्य की, धरे आशिका शीश। विशद कामना पूर्ण हो, पाएँ जिन आशीष।।

श्री आदिनाथ पूजन

(स्थापना)

जो कर्म भूमि के समय श्रेष्ठ, षट्कर्मों का उपदेश किए। तुम ऋषी बनो या कृषी करो, जीवों को यह संदेश दिए॥ ऐसे श्री ऋषभ देव स्वामी, जो धर्म प्रवर्तक कहलाए। हम आदिनाथ का आह्वानन, करने को चरणों में आए॥ ॐ हीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर-अवतर संवीषट् इति आहवाननं। ॐ हीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं। ॐ हीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र अत्र मम् सिन्निहितो भव भव वषट् सिन्निधिकरणं।

(सखी छन्द)

यह कलश में जल भर लाए, जल धार कराने आए। श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥1॥

- ॐ हीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा। केशर चन्दन में गारा, भव ताप नाश हो सारा। श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥2॥
- ॐ हीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा। अक्षय से पूजा रचाएँ, अक्षय पदवी को पाएँ। श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥३॥
- ॐ हीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं निर्व. स्वाहा। यह पुष्प चढ़ा हर्षाएँ, हम काम रोग विनशाएँ। श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥४॥
- ॐ हीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा। नैवेद्य चढ़ाने लाए, अब क्षुधा नशाने आए। श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥५॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

है मोह कर्म का नाशी, ये दीपक ज्ञान प्रकाशी। श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥6॥

ॐ हीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा। अग्नी में धूप जलाएँ, कर्मों से मुक्ती पाएँ। श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥७॥

ॐ हीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूप निर्व. स्वाहा। फल सरस चढ़ाने लाए, मुक्ती फल पाने आए। श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥8॥

ॐ हीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा। वसु द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, पावन अनर्घ्य पद पाएँ। श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥९॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- शांतीधारा जो करें, पावें शांती अपार। शिवपद के राही बनें, होवें भव से पार॥

।। शान्तेय-शान्तिधारा ।।

दोहा- पुष्पाञ्जलिं करते विशद, लेकर पावन फूल। कर्म अनादी से लगे, हो जाते निर्मूल।।

।। दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत।।

पञ्चकल्याणक

(मोतियादाम छन्द)

आषाढ़ विद द्वितीया रही महान, प्रभु जी पाए गर्भ कल्याण। पूजते आदिनाथ पद आज, बने जो तारण तरण जहाज॥।॥ ॐ हीं आषाढ़विद द्वितीयायां गर्भकल्याण प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्र विद नौमी को भगवान, प्राप्त शुभ किए जन्मकल्याण। पूजते आदिनाथ पद आज, बने जो तारण तरण जहाज॥२॥ ॐ हीं चैत्रविद नवम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्र विद नौमी को शुभकार, प्रभु ने संयम लीन्हा धार। पूजते आदिनाथ पद आज, बने जो तारण तरण जहाज॥३॥ ॐ हीं चैत्रविद नवम्यां तपकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वदी फाल्गुन एकादशी जान, प्रभु जी पाए केवलज्ञान। पूजते आदिनाथ पद आज, बने जो तारण तरण जहाज।।४।। ॐ हीं फाल्गुनविद एकादश्यां केवलज्ञानकल्याण प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ विद चौदश हुई महान, कैलाशगिरि से पाए निर्वाण। पूजते आदिनाथ पद आज, बने जो तारण तरण जहाज॥५॥ ॐ हीं माघविद चतुर्दश्यां मोक्षकल्याण प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वणमीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

शीश झुकाते आपके, चरणों बालाबाल। आदिनाथ भगवान की, गाते हम जयमाल॥ (चौबोला छन्द)

आदिनाथ तीर्थंकर स्वामी, धर्म प्रवर्तन किए महान। निज स्वभाव में लीन हुए प्रभु, पाए शाश्वत मुक्ती धाम॥ जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में, नगर अयोध्या महित महान। चयकर के सर्वार्थ सिद्धि से, पाए प्रभू गर्भ कल्याण॥1॥ पाण्डु शिला पे हर्ष भाव से, इन्द्र किए प्रभु का अभिषेक॥ नाम दिया सौधर्म इन्द्र ने, प्रभु के पग में लक्षण देख॥ षट् कर्मों का राज्य अवस्था, में ही दिए आप संदेश। नृत्य देखकर नीलाञ्जना का, संयम धारे प्रभु विशेष॥2॥ सिद्धारथ वन में जा प्रभु ने, निज आतम का किया मनन। एक हजार वर्ष तप करके, शुक्ल ध्यान में हुए मगन॥

कर्म घातियाँ नाश प्रभु ने, पाया पावन केवलज्ञान। इन्द्राज्ञा पा धन कुबेर ने, समवशरण कीन्हा निर्माण॥३॥ गंध कुटी में कमलाशन पर, अधर विराजे जिन तीर्थेश। ॐकारमय दिव्य देशना, द्वारा दिए भव्य संदेश।। अष्टापद पर जाके प्रभु जी, किए कर्म का पूर्ण विनाश। मोक्ष महापद को पाकर के, सिद्धिशला पर कीन्हे वास।४॥ किए प्रतिष्ठित जिन प्रतिमाएँ, नगर नगर में आभावान। विशद भाव से जिनके चरणों, करते हैं हम भी गुणगान॥ नाथ आपकी अर्चा करके, मेरे मन जागा आनन्द। पुण्योदय जागा है मेरा, हुआ पाप आश्रव भी मंद॥5॥ (धता छंद)

हे आदीश्वर! प्रथम जिनेश्वर, भव संताप विनाश करो। हम तुमको ध्याते पूज रचाते, मेरे उर में वास करो।। ॐ हीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। दोहा- तीन लोक में पूज्य है, आदिनाथ दरबार। जिनकी अर्चा से मिले, मोक्ष महल का द्वार।। इत्याशीर्वाद: पुष्पांजलिं क्षिपेत्

प्रथम वलयः

दोहा- पाए क्षायिक लब्धियाँ, आदिनाथ भगवान। करते जिनकी अर्चना, पाने शिव सोपान॥ प्रथम वलयोपिर पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् नौ क्षायिक लब्धियों के अर्घ्य

(शम्भू छंद)

ज्ञानावरणी कर्म विनाशे, केवलज्ञान जगाए हैं। ऐसे श्री अरहंत प्रभु पद सादर शीश झुकाए हैं॥ करके योग निरोध प्रभू जी, निज आतम को ध्याते हैं। कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धी पाते हैं॥1॥ ॐ हीं ज्ञानावरणी कर्मविनाशक क्षायिक ज्ञानलिब्ध प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म दर्शनावरणी नाशे, क्षायिक दर्शन पाए हैं। क्षायिक लब्धी पाने वाले, तीर्थंकर कहलाए हैं।। करके योग निरोध प्रभू जी, निज आतम को ध्याते हैं। कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धी पाते हैं।।2।। ॐ हीं दर्शनावरणी कर्म विनाशक क्षायिक दर्शनलब्धि प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन मोही कर्म विनाशे, सत् सम्यक्त्व जगाए हैं। कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धी पाए हैं॥ करके योग निरोध प्रभू जी, निज आतम को ध्याते हैं। कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धी पाते हैं॥3॥ ॐ हीं दर्शन मोहनीय कर्म विनाशक क्षायिक सम्यक्त्व लब्धि प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चारित मोही कर्म विनाशे, क्षायिक चारित पाए हैं। कर्म घातिया नाश किए प्रभु, तीर्थंकर कहलाए हैं।। करके योग निरोध प्रभू जी, निज आतम को ध्याते हैं। कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धी पाते हैं।।4।। ॐ हीं चारित्र मोहनीय कर्म विनाशक क्षायिक चारित्र लब्धि प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म विनाशी अन्तराय के, पाए हैं जो क्षायिक दान। क्षायिक लब्धी पाने वाले, तीन लोक में रहे महान्॥ करके योग निरोध प्रभू जी, निज आतम को ध्याते हैं। कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धी पाते हैं॥5॥ ॐ हीं दान अन्तराय कर्म विनाशक क्षायिक दान लब्धि प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। लाभ अन्तराय कर्म विनाशे, पाए क्षायिक लाभ महान्।
पूजनीय हो गये लोक में, करते हैं जग का कल्याण॥
करके योग निरोध प्रभू जी, निज आतम को ध्याते हैं।
कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धी पाते हैं॥।॥

ॐ ह्रीं लाभ अन्तराय कर्म विनाशक क्षायिक लाभ लब्धि प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भोग अन्तराय कर्म विनाशे, पाए हैं जो क्षायिक भोग। तीनों योगों के धारी के, मिटे जन्म मृत्यू के रोग॥ करके योग निरोध प्रभू जी, निज आतम को ध्याते हैं। कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धी पाते हैं॥७॥ ॐ हीं भोग अन्तराय कर्म विनाशक क्षायिक भोग लब्धि प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तराय कर्मों के नाशी, पाए हैं क्षायिक उपभोग। करके योग निरोध जिनेश्वर, पाते मुक्ती का संयोग॥ करके योग निरोध प्रभू जी, निज आतम को ध्याते हैं। कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धी पाते हैं॥॥॥ ॐ हीं उपभोग अन्तराय कर्म विनाशक क्षायिक उपभोग लब्धि प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीर्यान्तराय कर्म के नाशी, पाए क्षायिक वीर्य महान्। क्षायिक लब्धी पाने वाले, करते हैं जग का कल्याण॥ करके योग निरोध प्रभू जी, निज आतम को ध्याते हैं। कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धी पाते हैं॥॥ ॐ हीं वीर्यान्तराय कर्म विनाशक क्षायिक वीर्य लब्धि प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षायिक नौ लब्धी जो पाए, कर्म घातिया किए विनाश। ज्ञाता दृष्ट हुए लोक में, कीन्हे निज आतम में वास॥ तीन गती के जीव भाव से, भक्ती करने आते हैं। कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धी पाते हैं॥10॥

ॐ हीं चतु: घातिया कर्म विनाशक क्षायिक नवलिब्ध प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलयः

दोहा- दोष अठारह से रहित, होते हैं भगवान। जिनकी अर्चा कर मिले, पावन पद निर्वाण। (द्वितीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अठारह दोष से रहित जिन

(चौपाई)

केवलज्ञानी होने वाले, क्षुधा वेदना खोने वाले। दोष अठारह के हैं नाशी, गाए सिद्ध शिला के वासी॥॥॥

- 35 हीं क्षुधादोष रहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा। तृषा दोष भी न रह पाए, जो भी केवलज्ञान जगाए। दोष अठारह के हैं नाशी, गाए सिद्ध शिला के वासी॥2॥
- ॐ हीं तृषादोष रिहताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा। जन्म दोष भी न रह पाए, जो भी केवलज्ञान जगाए। दोष अठारह के हैं नाशी, गाए सिद्ध शिला के वासी॥3॥
- ॐ हीं जन्मदोष रिहताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा। जरा दोष की होती हानी, बन जाते जो केवल ज्ञानी। दोष अठारह के हैं नाशी, गाए सिद्ध शिला के वासी।।4।।
- 35 हीं जरादोष रहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा। विस्मय दोष रहे न भाई, केवलज्ञानी के दुखदायी। दोष अठारह के हैं नाशी, गाए सिद्ध शिला के वासी॥5॥
- 35 हीं विस्मयदोष रहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा। अरित दोष उनके भी खोवे, केवल ज्ञानी जो भी होवे। दोष अठारह के हैं नाशी, गाए सिद्ध शिला के वासी।।।।
- ॐ हीं अरितदोष रहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा। खेद दोष के होते त्यागी, केवल ज्ञानी बहु बड़भागी। दोष अठारह के हैं नाशी, गाए सिद्ध शिला के वासी॥७॥
- ॐ ह्रीं खेददोष रहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

- रोग देह में कभी न आवे, जो भी केवल ज्ञान जगावे। दोष अठारह के हैं नाशी, गाए सिद्ध शिला के वासी॥८॥ ॐ हीं रोग रहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
- हीं रोग रहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा मन में शोक कभी न लाते, जो नर केवल ज्ञान जगाते। दोष अठारह के हैं नाशी, गाए सिद्ध शिला के वासी॥१॥
- 35 हीं शोकदोष रहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा। मद उनके कैसे रह पावे, जो भी केवल ज्ञान जगावे। दोष अठारह के हैं नाशी, गाए सिद्ध शिला के वासी॥10।
- ॐ हीं मददोष रहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा। मोह दोष के हैं वे नाशी, जो हैं केवलज्ञान प्रकाशी। दोष अठारह के हैं नाशी, गाए सिद्ध शिला के वासी॥11॥
- ॐ हीं मोहदोष रिहताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा। भय का क्षय उनके हो जावे, केवल ज्ञान मुनि प्रगटावे। दोष अठारह के हैं नाशी, गाए सिद्ध शिला के वासी॥12॥
- ॐ हीं भयदोष रिहताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा। निद्रा दोष त्यागते स्वामी, केवलज्ञानी अन्तर्यामी। दोष अठारह के हैं नाशी, गाए सिद्ध शिला के वासी॥13॥
- ॐ हीं निद्रादोष रहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। चिंता उनके हृदय न आवे, जो तीर्थंकर पदवी पावे। दोष अठारह के हैं नाशी, गाए सिद्ध शिला के वासी॥14॥
- 35 हीं चिंतादोष रहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा। स्वेद रहे न तन में कोई, जिनने भव से मुक्ति पाई। दोष अठारह के हैं नाशी, गाए सिद्ध शिला के वासी॥15॥
- ॐ हीं स्वेददोष रिहताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा। राग-दोष उनका नश जाए, मुनिवर केवलज्ञान जगाए। दोष अठारह के हैं नाशी, गाए सिद्ध शिला के वासी॥16॥
- ॐ ह्रीं रागदोष रहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

- मन में द्वेष कभी न लावें, विशद ज्ञान जो मुनि प्रगटावें। दोष अठारह के हैं नाशी, गाए सिद्ध शिला के वासी॥17॥
- 35 हीं द्वेषदोष रिहताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। मरण दोष के होते नाशी, केवल ज्ञानी शिवपुर वासी। दोष अठारह के हैं नाशी, गाए सिद्ध शिला के वासी॥18॥
- ॐ ह्रीं मरण दोष रिहताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा। आदिनाथ जिनवर अविकारी, अष्टकर्म के हैं संहारी। दोष अठारह के हैं नाशी, गाए सिद्ध शिला के वासी॥19॥

ॐ हीं द्वाविंशति परीषहजय एवं अष्टादश दोषरहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलयः

दोहा- छियालिस पाए मूलगुण, आदिनाथ भगवान। अर्चा करते भाव से, जिनकी महति महान॥ तृतीय वलयोपरि पृष्पांजलिं क्षिपेत्

10 जन्म के अतिशय

दश अतिशय पाए प्रभु पावन, निर्मल सुखदाई। स्वेद रहित जिनवर का तन है, अति पावन भाई॥ प्रभु जी शिवपदवी पाए।

जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगल गाए।।1।।

ॐ हीं स्वेदरिहत सहजातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेद्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु तन है मल मूत्र रहित शुभ, अति पावन भाई।

भव्यों को आह्लादित करता, निर्मल सुखदाई।।

प्रभु जी शिवपदवी पाए।

जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगल गाए॥२॥ ॐ हीं नीहाररिहत सहजातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेद्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा। समचतुस्त्र संस्थान प्रभु का, सुन्दर सुखदाई। घट बढ़ अंग न होवे कोई, जिन की प्रभुताई॥ प्रभु जी शिवपदवी पाए।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगल गाए॥३॥
ॐ हीं समचतुष्क संस्थान सहजातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेद्राय अर्घ्यं निर्व स्वाहा।
वज्रवृषभ नाराच संहनन, श्री जिनेन्द्र पाए।
परमौदारिक तन का बल प्रभु, अतिशय प्रगटाए॥
प्रभु जी शिवपदवी पाए।
जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगल गाए॥४॥
ॐ हीं वज्रवृषभनाराच संहनन सहजातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेद्राय अर्घ्यं निर्व स्वाहा।
सुरभित परम सुगंधित श्री जिन, मनहर तन पाए।
तीर्थंकर प्रकृति के कारण, अतिशय दिखलाए॥
प्रभु जी शिवपदवी पाए।

जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगल गाए॥5॥
ॐ हीं सुगींधत तन सहजातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेद्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
रूप सुसुंदर महा मनोहर, श्री जिनवर पाए।
अतिशय रूप के धारी जिनके, पावन गुण गाए॥
प्रभु जी शिवपदवी पाए।

जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगल गाए॥६॥
ॐ हीं अतिशयरूप सहजातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेद्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
आठ अधिक इक सहस सुलक्षण, तन में कहलाए।
जन्म होत ही श्री जिनवर ने, मंगलमय पाए॥
प्रभु जी शिवपदवी पाए।

जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगल गाए॥७॥ ॐ हीं सहस्राष्टलक्षण सहजातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेद्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा। प्रभु के तन में रक्त मनोहर, श्वेत वर्ण भाई। यह अतिशय अनुपम कहलाए, प्रभु की प्रभुताई॥ प्रभु जी शिवपदवी पाए।

जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगल गाए॥८॥ ॐ ह्रीं श्वेतरुधिर सहजातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेद्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा। जन-जन का मन मोहित करती, हित-मित प्रिय वाणी। अतिशय अनुपम मंगलमय है, जग की कल्याणी॥ प्रभु है पावन वाणी।

जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, शिव पद वरदानी॥१॥ ॐ हीं प्रियहितवचन सहजातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेद्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा। सर्व जहाँ में अतिशयकारी, बल जिनवर पाए। भिक्त भाव से सुर नर प्रभु के, चरणों सिर नाए॥ प्रभु जी शिवपदवी पाए।

जन्म का अतिशय पाए श्री जिन, जग मंगल गाए॥10॥ ॐ हीं अतुल्यबल सहजातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेद्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

10 केवलज्ञान के अतिशय

(विष्णुपद छन्द)

केवलज्ञान प्रकट होते ही, दश अतिशय पावें। शत् योजना दुष्काल वहाँ का, शीघ्र विनश जावे॥ श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए। अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए॥11॥

ॐ हीं गव्यूति शत् चतुष्टय सुभिक्षत्व घातिक्षय जातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

> होय गमन आकाश प्रभू का, अति विस्मयकारी। भिक्त भाव से आते मिलकर, वहाँ देव भारी॥ श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए। अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए॥12॥

ॐ हीं आकाशगमन घातिक्षय जातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा। तीन लोक के नाथ! जिनेश्वर, भक्ती हितकारी। मार सके न कोई किसी को, हैं अदया हारी॥ श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए। अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए॥13॥

ॐ ह्रीं अदयाभाव घातिक्षय जातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

होय नहीं उपसर्ग प्रभु पर, किसी तरह भाई। विशद ज्ञान की महिमा है यह, प्रभु की प्रभुताई॥ श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए। अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए॥14॥

ॐ हीं उपसर्गाभाव घातिक्षय जातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्वधा रोग से पीड़ित सारे, जग में जीव कहे।

श्वधा वेदना को जीते प्रभु, बिन आहार रहे।।

श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए।

अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए॥11॥

ॐ ह्रीं कवलाहार रहित घातिक्षय जातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा। समवशरण में अधर विराजे, पूर्व दृष्टि कीजे। भवि जीवों को चतुर्दिशा में, प्रभु दर्शन दीजे।। श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए। अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए॥16॥

ॐ हीं चतुर्मुखदर्श घातिक्षय जातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा। सब विद्या के ईश्वर प्रभु जी, सकल ज्ञानधारी। ध्यावें प्रभु को भिक्त भाव से, होवें सुखकारी।। श्री अरहंत सकल परमातम, विशव ज्ञान पाए। अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए॥17॥

ॐ हीं सर्व विद्येशवरत्व घातिक्षय जातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
पुद्गल के परमाणू मिलकर, बने देह भाई।
छाया नहीं पड़े प्रभु तन की, प्रभु अतिशय पाई।।
श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए।
अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए॥18॥

ॐ हीं छायारिहत घातिक्षय जातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा। बढ़ें नहीं नख केश जरा भी, विशद ज्ञान जगते। उपमा नहीं है जग में कोई, अति मनहर लगते॥

श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए। अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए॥19॥

ॐ हीं समान नखकेशत्व घातिक्षय जातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

> पलक झपकती नहीं बंद न, खुलती है भाई। नाशादृष्टी रहे निरन्तर, यह शुभ प्रभुताई।। श्री अरहंत सकल परमातम, विशद ज्ञान पाए। अतिशय केवलज्ञान के धारी, जिन पद सिर नाए।।20॥

ॐ ह्रीं अक्षरपंदरहित घातिक्षय जातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

14 देवकृत अतिशय

चौदह अतिशय कहे देवकृत, श्री जिन के भाई। अर्धमागधी भाषा प्रभु की, भविजन सुखदाई॥ तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी। सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी॥21॥

ॐ हीं सर्वार्धमागधी भाषा देवोपनीतातिशय धारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
मैत्रीभाव सभी जीवों में, स्वयं जगे भाई।
महिमा विस्मयकारी है शुभ, प्रभु की प्रभुताई।।
तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।
सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।22।।

ॐ हीं सर्वमैत्रीभाव देवोपनीतातिशय धारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

षट् ऋतु के फल फूल स्वयं ही, खिल जाते भाई।

श्री जिन का हो गमन जहाँ पर, प्रभु की प्रभुताई।।

तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी।

सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।23।।

ॐ ह्रीं सर्वतुफलादि तरु परिणाम भाषा देवोपनीतातिशय धारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

> दर्पण सम भूमी हो जावे, अति मंगलकारी। जहाँ चरण पड़ते श्री जिनके, हो विस्मयकारी॥

तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी। सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी॥24॥

ॐ ह्रीं आदर्शतल प्रतिमा रत्नमही देवोपनीतातिशय धारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

> सुरिभत मंद पवन बहती है, भविजन सुखदाई। श्रीजिन की महिमा का फल है, प्रभु की प्रभुताई॥ तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी। सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी॥25॥

ॐ ह्रीं सुगंधित विहरण मनुगत वायुत्व देवोपनीतातिशय धारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

> सर्वानंद होय इस जग में, जिन दर्शन पाके। सुरपित नरपित धन्य मानते, जिन के गुण गाके॥ तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी। सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी॥26॥

ॐ ह्रीं सर्वानंदकारक देवोपनीतातिशय धारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कंटक रहित भूमि हो जावे, श्री जिन पद पाके। सुरपति नरपति हर्ष मनावें, श्री जिन गुण गाके॥ तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी। सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी॥27॥

ॐ ह्रीं वायुकुमारोपशमित धूलि कंटकादि भाषा देवोपनीतातिशय धारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

> नभ में जय जयकार करें सुर, महिमा दिखलावें। हो अपार सुखकारी जग में, प्रभु के गुण गावें।। तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी। सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी।।28।।

ॐ हीं आकाशे जय-जयकार देवोपनीतातिशय धारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा। गंधोदक की वृष्टि करें सुर, मन में हर्षावें। जन-जन को हितकारी पावन, महिमा दिखलावें॥ तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी। सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी॥29॥

ॐ ह्रीं मेघकुमारकृत गंधोदक वृष्टि देवोपनीतातिशय धारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

> चरण कमल तल कमल रचाते, पावन सुखदाई। सुर नरेन्द्र की महिमा है यह, प्रभु की प्रभुताई॥ तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी। सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी॥30॥

ॐ ह्रीं चरण कमल तलरचित स्वर्ण कमल देवोपनीतातिशय धारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

> गगन सुनिर्मल हो जावे अति, श्री जिन के आवें। नर सुरेन्द्र अति नाचे गावें, मन में हर्षावें॥ तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी। सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी॥31॥

ॐ ह्रीं शरदकाल विन्तर्मल गगन गमनत्व देवोपनीतातिशय धारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

> सर्व दिशाएँ धूम रहित हों, मनहर सुखदाई। नाचें गावें हर्ष मनावें, सुर नर गुण गाई।। तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी। सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी॥32॥

ॐ हीं सर्वानंदकारक देवोपनीतातिशय धारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा। धर्मचक्र चलता है आगे, शुभ महिमाधारी। भिव जीवों के मन को मोहे, अति मंगलकारी॥ तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी। सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी॥33॥

ॐ हीं धर्मचक्रचतुष्टय भाषा देवोपनीतातिशय धारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मंगल द्रव्य अष्ट शुभ लावें, भिक्त सिहत भाई। देव समर्पित रहें भाव से, जिन महिमा गाई॥ तीन लोक के नाथ जिनेश्वर, अतिशय के धारी। सुरकृत अतिशय पाने वाले, जग में उपकारी॥34॥

ॐ ह्रीं अष्ट मंगल द्रव्य देवोपनीतातिशय धारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आठ प्रातिहार्य के अर्घ्य

(हरिगीतिका छंद)

तरु अशोक सुंदर सुखदाई, दीखे मनहर भाई। सब जीवों के शोक हरे जो, यह प्रभु की प्रभुताई।। श्री अरहंत सकल परमातम, प्रातिहार्य वसुधारी। अर्घ्य चढ़ाऊँ भिक्त भाव से, अतिशय मंगलकारी।।35॥

ॐ हीं अशोकतरु सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
पुष्प सुवृष्टी करते सुरगण, मन में अति हर्षावें।
पूजा अर्चा करें वंदना शुभ, अतिशय गुण गावें।।
श्री अरहंत सकल परमातम, प्रातिहार्य वसुधारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भिक्त भाव से, अतिशय मंगलकारी।।36॥

ॐ हीं पुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
दिव्य ध्विन खिरती जिनवर की, ओम्कार मय प्यारी।
पाप विनाशी धर्म प्रकाशी, हैं जग में मंगलकारी।।
श्री अरहंत सकल परमातम, प्रातिहार्य वसुधारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भिक्त भाव से, अतिशय मंगलकारी॥37॥

ॐ हीं दिव्यध्विन सत्प्रातिहार्यसिहताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा। चौंसठ चँवर ढुरें प्रभु आगे, सुंदर शुभ सुखकारी। महिमा दिखलाते श्री जिन की, होते है विस्मयकारी॥ श्री अरहंत सकल परमातम, प्रातिहार्य वसुधारी। अर्घ्य चढाऊँ भिंकत भाव से, अतिशय मंगलकारी॥38॥

ॐ हीं चतु:षष्ठिचामर सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

रत्न जड़ित सुंदर सिंहासन, जिनवर का सोहे। अधर विराजे उस पर श्री जिन, जो सब जग को मोहे॥ श्री अरहंत सकल परमातम, प्रातिहार्य वसुधारी। अर्घ्य चढ़ाऊँ भिक्त भाव से, अतिशय मंगलकारी॥39॥

35 हीं सिंहासन सत्प्रातिहार्यसिंहताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
भामण्डल के आगे लिज्जित, कोटि भी सूर्य होवें।
सप्त भवों को जाने भविजन, मन की जड़ता खोवें।।
श्री अरहंत सकल परमातम, प्रातिहार्य वसुधारी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भिक्त भाव से, अतिशय मंगलकारी।।40॥

ॐ हीं भामण्डल सत्प्रातिहार्यसहिताय धारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा। देव दुंदुभि बाजे बजते, सब आकाश गुँजावें। देव करें गुणगान भिक्त से, मन में अति हर्षावें॥ श्री अरहंत सकल परमातम, प्रातिहार्य वसुधारी। अर्घ्य चढ़ाऊँ भिक्त भाव से, अतिशय मंगलकारी॥41॥

ॐ हीं देवदुंदुभि सत्प्रातिहार्यसहिताय धारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा। तीन छत्र शुभ रत्न जड़ित हैं, चन्द्र कांति छवि धारी। तीन लोक की महिमा गावें, शुभ अतिशय सुखकारी।। श्री अरहंत सकल परमातम, प्रातिहार्य वसुधारी। अर्घ्य चढ़ाऊँ भिक्त भाव से, अतिशय मंगलकारी।।42।।

ॐ हीं छत्रत्रय सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चार अनंत चतुष्टय

दर्श अनंत पाए जिनवर जी, सर्व लोक दर्शाये। कर्म दर्शनावरणी नाशे, तिन पद शीश झुकाये॥ श्री अरहंत सकल परमातम, अनंत चतुष्टय धारी। अर्घ्य चढ़ाऊँ भिक्त भाव से, अतिशय मंगलकारी।43॥

ॐ हीं अनंतदर्शन गुणप्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। ज्ञानावरणी कर्म नाशकर, केवलज्ञान प्रकाशे। सर्व लोक के ज्ञाता श्रीजिन, सर्व चराचर भासे॥ श्री अरहंत सकल परमातम, अनंत चतुष्टय धारी। अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, अतिशय मंगलकारी।44॥

- ॐ हीं अनंतज्ञान गुणप्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। मोहनीय को मोहित करके, ऐसा सबक सिखाया। हार मान झुक गया चरण में, पास नहीं फिर आया॥ श्री अरहंत सकल परमातम, अनंत चतुष्टय धारी। अर्घ्य चढाऊँ भिक्त भाव से, अतिशय मंगलकारी।45॥
- ॐ हीं अनंतसुख गुणप्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। अन्तराय कर्मों के नाशी, जिन अर्हत् कहलाए। निज आतम का ध्यान लगाकर, वीर्यानन्त जगाए।। श्री अरहंत सकल परमातम, अनंत चतुष्टय धारी। अर्घ्य चढ़ाऊँ भिक्त भाव से, अतिशय मंगलकारी।।46॥

ॐ ह्रीं अनंतवीर्य गुणप्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- छियालिस पाए मूलगुण, आदिनाथ भगवान। विशद गुणों के हेतु हम, करते हैं गुणगान।।47॥

ॐ हीं षट् चत्त्वारिंशद्गुणप्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

समुच्चय जयमाला

दोहा- गुण गाते हैं भाव से, जिनके बालाबाल। ऋषभदेव भगवान की, गाते हैं जयमाल।। (ज्ञानोदय छन्द)

जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में, रही अयोध्या पुरी विशाल। नाभिराय चौदहवें कुलकर, के सुत मरुदेवी के लाल।। सोलह स्वप्न देखती माता, रत्न वृष्टि हो पन्द्रह मास। चये आप सर्वार्थ सिद्धि से, पाया प्रभु ने गर्भावास।।।। मित श्रुत अविध ज्ञान के धारी, होके पाएँ जन्मकल्याण। हर्षित शत इन्द्रों ने पाण्डु, शिला पे किया अभिषेक महान।। असि मिस कृषि वाणिज्य कला अरु, शिल्प का दिए आप उपदेश। राज्य अवस्था को पाके प्रभु, जग के कष्ट मिटाए विशेष।।2॥ नीलाञ्जना की मृत्यु देख के, मन में धारे प्रभू विराग। द्वादश अनुप्रेक्षा का चिन्तन, करके किए भोग का त्याग।। वन सिद्धार्थ वृक्ष वट नीचे, नमः सिद्धेभ्यः बोल विशेष। स्वयं बुद्ध हो दीक्षा धारे, धारे आप दिगम्बर भेष।।3॥ एक वर्ष पश्चात इच्छुरस, नगर हस्तिनापुर आहार। राजा सोम श्रेयांस के गृह में, दान तीर्थ का किए प्रचार॥ एक हजार वर्ष तप करके, कर्म घातियाँ किए विनाश। अनन्त चतुष्टय पाए प्रभु ने, कीन्हा केवल ज्ञान प्रकाश।।4॥ वृषभ सेनादि गणी चुरासी, आर्यिका ब्राह्मी रही प्रधान। गिरि कैलाश कहा अष्टापद, पाए प्रभु जी पद निर्वाण॥ जिसकी प्रतिकृति में जिन प्रतिमा, आदिनाथ की महति महान। जिनके चरणों विशद भाव से, करते हैं हम भी गुणगान॥5॥ दोहा- धनुष पाँच सौ उच्च प्रभु, तन स्वर्णाभावान।

वृषभ चिन्ह से शोभते, पूज्य हुए भगवान॥
ॐ हीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
दोहा- धर्म प्रवर्तन कर प्रभू, खोले मुक्ती द्वार।
ऐसे आदि जिनेश पद, वन्दन बारम्बार॥
॥ इत्याशीर्वाद: पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

मुबारक ये जन्म दिन हो विशद खुशियों से भर जाए। कभी जीवन में अब तुमको कोई भी गम नहीं आए॥ खुशी जीवन में हो अनुपम विशद हम भावना भाते। ये जीवन आपका बन्धु श्रेष्ठ फूलों सा महकाए॥

श्री आदिनाथ चालीसा

दोहा- परमेष्ठी जिन पाँच हैं, मंगल उत्तम चार। शरण चार की प्राप्ति कर, भवदिध पाऊँ पार॥ वंदन करके भाव से, करते हम गुणगान। चालीसा जिन आदि का, गाते विशद महान॥ चौपाई

लोकालोक अनन्त बताया. जिसका अन्त कहीं न पाया॥1॥ लोक रहा है विस्मयकारी, चौदह राजू है मनहारी॥2॥ ऊर्घ्व लोक ऊर्घ्व में गाया, अधोलोक नीचे बतलाया॥३॥ मध्य लोक है मध्य में भाई, सागर दीप युक्त सुखदायी।।4।। नगर अयोध्या जन्म लिया है, नाभिराय को धन्य किया है॥5॥ सर्वार्थ-सिद्धि से चय कर आये, मरुदेवी के लाल कहाए।।।।। चिन्ह बैल का पद में पाया, लोगों ने जयकार लगाया॥७॥ आदिनाथ प्रभु जी कहलाए, प्राणी सादर शीश झुकाए॥८॥ जीवों को षट् कर्म सिखाए, सारे जग के कष्ट मिटाए॥१॥ पद युवराज का पाये भाई, विधि स्वयंवर की बतलाई॥10॥ सुत ने चक्रवर्ति पद पाया, कामदेव सा पुत्र कहाया॥11॥ हुई पुत्रियाँ उनके भाई, कालदोष की यह प्रभुताई॥12॥ ब्राह्मी को श्रुत लिपि सिखाई, ब्राह्मी लिपि अतः कहलाई॥13॥ लघु सुता सुन्दरी कहलाई, अंक ज्ञान की कला सिखाई॥14॥ लाख तिरासी पूरब जानो, काल भोग में बीता मानो॥15॥ इन्द्र के मन में चिंता जागी, प्रभु बने बैठे हैं रागी॥16॥ उसने युक्ति एक लगाई, देवी नृत्य हेतु बुलवाई॥17॥ उससे अतिशय नृत्य कराया, तभी मरण देवी ने पाया॥18॥ दृश्य प्रभु के मन में आया, प्रभु को तब वैराग्य समाया॥19॥ केश लुंच कर दीक्षा धारी, संयम धार हुए अविकारी॥20॥ छह महीने का ध्यान लगाया, चित् का चिंतन प्रभु ने पाया।121।। चर्या को प्रभु निकले भाई, विधि किसी ने जान न पाई॥22॥

छह महीने तक प्रभु भटकाए, निराहार प्रभु काल बिताए॥23॥ नृप श्रेयांश को सपना आया, आहार विधि का ज्ञान जगाया।124।। अक्षय तृतीया के दिन भाई, चर्या की विधि प्रभु ने पाई॥25॥ भूप ने यह सौभाग्य जगाया, इक्षु रस आहार कराया॥26॥ पञ्चाश्चर्य हुए तब भाई, ये है प्रभुवर की प्रभुताई॥27॥ प्रभुजी केवलज्ञान जगाए, समवशरण तब देव बनाए॥28॥ प्रातिहार्य अतिशय प्रगटाए, दिव्य ध्वनि तब प्रभु सुनाए॥29॥ बारह योजन का शुभ गाए, गणधर चौरासी प्रभु पाए॥३०॥ माघ वदी चौदश कहलाए, अष्टापद से मोक्ष सिधाए॥३1॥ मोक्ष मार्ग प्रभु ने दर्शाया, जैनधर्म का ज्ञान कराया॥32॥ योग निरोध प्रभुजी कीन्हें, कर्म नाश सारे कर दीन्हें॥33॥ शिव पदवी को प्रभु ने पाया, सिद्ध शिला स्थान बनाया॥३४॥ बने पूर्णतः प्रभु अविकारी, सुख अनन्त पाये त्रिपुरारी॥35॥ हम भी यही भावना भाते, पद में सादर शीश झुकाते॥36॥ जगह-जगह प्रतिमाएँ सोहें, भवि जीवों के मन को मोहें॥37॥ क्षेत्र बने कई अतिशयकारी, सारे जग में मंगलकारी॥38॥ जिस पदवी को तुमने पाया, वह पाने का भाव बनाया॥39॥ तव पूजा का फल हम पाएँ, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ।४०॥

दोहा- चालीसा चालीस दिन, दिन में चालीस बार। 'विशद' भाव से जो पढ़ें, पावे भव से पार॥ रोग शोक पीड़ा मिटे, होवे बहु गुणवान्। कर्म नाश कर अन्त में, होवे सिद्ध महान्॥

मिला जो जन्म है हमको, पूर्व के पुण्य का फल है। करे जो कर्म यह मानव, विशद फल आज का कल है।। मनाओ जन्म दिन ऐसा, जन्म न फिर कभी पाए। जो पाया जन्म ये जग, यहाँ से तो चला चल है।।

श्री आदिनाथ की आरती

(तर्ज - आज करे हम.....)

आज करें हम विशद भाव से. आरती मंगलकारी। मणिमय दीपक लेकर आये. आदिनाथ दरबार॥ हो जिनवर-हम सब उतारे मंगल आरती।।टेक।। जन्म प्राप्त कर नगर अयोध्या, को प्रभु धन्य बनाया। नाभिराय राजा मरुदेवी. ने सौभाग्य जगाया।। हो जिनवर-हम सब उतारे मंगल आरती॥1॥ षट् कर्मों की शिक्षा देकर, सबके भाग्य जगाए। नर-नारी सब नाचे गाये, जय जयकार लगाए।। हो जिनवर-हम सब उतारे मंगल आरती॥2॥ रत्नत्रय पाकर हे स्वामी, मोक्ष मार्ग अपनाया। आतम ध्यान लगाकर तुमने, कोवलज्ञान जगाया।। हो जिनवर-हम सब उतारे मंगल आरती॥३॥ यही भावना भाते हैं हम, तव पदवी को पावें। मोक्ष प्राप्त न होवें जब तक, शरण आपकी आवें॥ हो जिनवर-हम सब उतारे मंगल आरती॥४॥ अष्टापद में भक्त आपके, दर्श आपका पाते। 'विशद' आरती करने वाले, बिगडे भाग्य बनाते॥ हो जिनवर-हम सब उतारे मंगल आरती॥५॥

नहीं अपने पराए का जिसे कुछ ज्ञान होता है। नहीं गरिमा का भी अपने, जिसे कुछ ध्यान होता है॥ विशद जो लोग हैं ऐसे, नहीं विश्वास के काबिल। जमाने में विशद सच्चा, नहीं वो इन्सान होता है॥

श्री पार्श्वनाथ की आरती

तर्ज-हम सब उतारे तेरी आरती.....

आज करें हम विशद भाव से, आरित मंगलकारी-2। पार्श्वनाथ भगवान कहाते-2, जग जन के दुखहारी॥ हो जिनवर ॥टेक॥

अच्युत स्वर्ग से चयकर स्वामी, माँ के गर्भ में आए-2। अश्वसेन वामा देवी माँ-2, को प्रभु धान्य बनाए॥ हो जिनवर......॥॥॥

गर्भोत्सव पर काशी नगरी, आके देव सजाए-2। छह नौ माह रत्न वृष्टी कर-2, नाचे हर्ष मनाए॥ हो जिनवर.....॥2॥

जन्मोत्सव पर मेरु गिरि पर, आके न्हवन कराए-2। सब इन्द्रों ने मिलकर भाई-2, जय जयकार लगाए॥ हो जिनवर......॥3॥

यह संसार असार जानकर, उत्तम संयम पाए-2। ज्ञानोत्सव पर समवशरण शुभ-2, आके धनद बनाए॥ हो जिनवर......॥४॥

शाश्वत तीर्थ की स्वर्ण-भद्र शुभ, कूट से मुक्ती पाए-2। 'विशद' आपकी आरती करने-2, भक्त शरण में आए॥ हो जिनवर......॥5॥

श्री अरिहंत प्रभु की आरती

तर्ज-कंचन की थाली लाए...... कंचन की थाली लाए, रत्नों के दीप जलाएँ। गोघत से करते थारी आरती॥ हो देवा, हम सब उतारें थारी आरती।।टेक।। चयकर के प्रभु स्वर्ग से आए, गर्भ कल्याणक पाएँ। छह नौ माह देव भक्ती से, रत वृष्टि करवाएँ॥ हम सब जिन महिमा गाए, भक्ती से शीश झुकाएँ। करते हैं भविजन थारी आरती, हो देवा....॥1॥ जन्म कल्याणक के अवशर पर, ऐरावत सुर लाए। पाण्डुक शिला पे न्हवन कराके, जय-जयकार लगाए॥ सचियाँ श्रृंगार कराए, भक्ती से नाचे गाए। सब मिल उतारे थारी आरती, हो देवा...।।2।। तप कल्याणक के अवसर पर, देव पालकी लाएँ। बैठाकर के प्रभु को उसमें, दीक्षावन ले जाएँ॥ वस्त्र जो स्वयं उतारें. केश भी आप उखाडे। नचि-नचि के करते हैं थारी आरती, हो देवा....॥3॥ शृद्धोपयोग लगाकर प्रभु जी, घाती कर्म नशावें। अनन्त चतुष्टय पाने वाले, केवल ज्ञान जगावें॥ दिव्य ध्विन आप सुनाए, तत्वों का सार बताएँ। कहलाए जो जिन भारती, हो देवा....।।4।। योग निरोध करें जिन स्वामी, आठों कर्म नशाएँ। अष्ट गुणों को पाने वाले, मोक्ष महापद पाएँ॥ नख केश देव जलाएँ, भस्म को माथ लगाए। सुस्वर से गाए पावन आरती, हो देवा....॥५॥ तीन लोक में पुज्य हुए हैं, तीर्थंकर पद धारी। महावीर की महिमा गाते, इस जग के नर नारी॥ समिकत का दीपक लाए, ज्ञान की ज्योति जलाए। चारित की गाए विशद आरती, हो देवा....॥६॥

त्रिकाल चौबीसी की आरती

तर्ज- ॐ जय....

🕉 जय जिनवर देवा. स्वामी जय जिनवर देवा। त्रैकालिक जिनवर की करते. भाव सहित सेवा॥ 🕉 जय जिनवर देवा।।टेक।। निर्वाणादिक भतकाल के. चौबीस जिन गाए। स्वामी चौबीस जिन गाए। घृत के दीप जलाकर के हम-2, आरित को लाए। ॐ जय जिनवर देवा॥1॥ वर्तमान के तीर्थंकर हैं. वषभादिक भाई। स्वामी वृषभादिक भाई॥ भरत क्षेत्र में फैल रही है-2, जिन की प्रभुताई। ॐ जय जिनवर देवा॥२॥ महापद्म आदिक भविष्य के, जिनवर अविकारी। स्वामी जिनवर अविकारी॥ तीर्थंकर चौबीस कहलाए-2. जिन मंगलकारी। ॐ जय जिनवर देवा॥३॥ विद्यमान जिन हैं विदेह के. जिनको हम ध्यातें। स्वामी जिनको हम ध्याते॥ तीन योग से जिनके चरणों-2. हम भी शिर नातें। ॐ जय जिनवर देवा॥४॥ तीन काल के तीर्थंकर की. पावन प्रतिमाएँ। स्वामी पावन प्रतिमाएँ॥ विद्यमान तीर्थेश 'विशद' हैं-2, महिमा हम गाएँ। ॐ जय जिनवर देवा॥५॥

सहस्त्रकूट की आरती

तर्ज- इह विधि मंगल.....

सहस्त्र कूट की आरित कीजे, अपना जन्म सफल कर लीजे।टेक।। जिसमें सहस्र आठ प्रतिमाएँ, वीतरागता जो दर्शाएँ। सहस्त्र...।।।। सहस्त्र आठ लक्षण के धारी, जिनवर होते है अविकारी। सहस्त्र...।।।। साधू करें साधना भारी, तप होता है कर्म निवारी। सहस्त्र...।।।।। तप कर पावन पुण्य कमाएँ, कर्म निर्जरा भी जो पाएँ। सहस्त्र...।।।। प्रभु अर्हत् पदवी को पाएँ, कर्म नाश कर शिव पद पाएँ। सहस्त्र..।।।।। स्थापित जिन बिम्ब कराएँ, जिनकी अर्चा कर हर्षाएँ। सहस्त्र..।।।।। हम भी अतिशय पुण्य कमाएँ, 'विशद' मोक्ष पदवी को पाएँ। सहस्त्र..।।।।। कर्म नाशकर शिवपुर जाएँ, मानव जीवन सफल बनाएँ। सहस्त्र..।।।।।।

मानस्तम्भ की आरती...

(तर्ज-इह विधि मंगल आरति...)

मानस्तंभ की आरित कीजे, अपना जन्म सफल कर लीजे।टेक॥ जिनवर चारों दिश में सोहें, भिव जीवों के मन को मोहे-मानस्तम्भ... पूर्व दिशा में जिनवर गाए, वीतरागता जो दर्शाए-मानस्तम्भ... दिश्चण दिश की प्रतिमा प्यारी, देखत लागे अतिमनहारी-मानस्तम्भ... पश्चिम दिश के श्री जिन स्वामी, गाए पावन अन्तर्यामी-मानस्तम्भ... उत्तर के जिन बिम्ब निराले, भव्यों का मन हरने वाले-मानस्तम्भ... मानस्तंभ का दर्शन पाए, क्षण में मान गिलत हो जाए-मानस्तम्भ... 'विशद' भावना हम ये भाएँ, बार-बार जिन दर्शन पाएँ-मानस्तम्भ... दीप जलाकर के यह लाए, आरित के सौभाग्य जगाए-मानस्तम्भ...

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज: माई री माई मुंडरे पर तेरे बोल रहा कागा...)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारें, आरित मंगल गावें। करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥ गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता। नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता॥ सत्य अहिंसा महाव्रती की...2, महिमा कही न जाये। करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥ गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया। बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया॥ जग की माया को लखकर के....2, मन वैराग्य समावे। करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥ गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के....

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा। विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा। गुरु की भक्ती करने वाला...2, उभय लोक सुख पावे। करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥ गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे। सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे॥ आशीर्वाद हमें दो स्वामी....2, अनुगामी बन जायें। करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥ गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के...जय...जय॥

रचियता : श्रीमती इन्दुमती गुप्ता, श्योपुर

आचार्य श्री विशदसागर जी द्वारा रचित 182 विधानों की विशाल श्रृंखला पर्वों के दिनों में करने योग्य विधान

26. णामोकार मण्डल विधान 27. भ्रतामर मण्डल विधान 28. सम्मेद श्रिण्डर विधान 29. भ्रुत रक्षंघ विधान 29. भ्रुत रक्षंघ विधान 20. याग मण्डल विधान	आचार्य श्री विशदसागर जी द्वारा	रचित 182 विधानी को विशाल श्रृखला	पर्वो के दिनों में करने योग्य विधान
3. श्री सफलनात पणडल विधान 4. श्री अर्धमन्तनात पणडल विधान 5. श्री स्मामतात पणडल विधान 6. श्री पल्लाम विधान 6. श्री पल्लाम विधान 7. श्री सुमामतात विधान 7. श्री स्मामतात विधान 7. श्री सुमामतात विधान 7. सुमामतात	1 श्री आदिनाश मणडल विधान	62 सम्बद्ध आगधना विधान	l 124 याग्रामण्डल विधान (लघ)
 8. श्री सम्भवनाख मण्डल विधान 8. श्री स्पत्रमां मण्डल विधान 8. श्री स्पत्रमां पण्डल विधान 8. श्री स्पत्रमां विधान 8. श्री स्पत्रमां विधान 9. श्री पुण्यत्र विधान 10. श्री ग्रीपाल्यत्र विधान 11. श्री श्री अपत्रमां विधान 12. श्री माम्यर विधान 13. श्री विधान विधान 14. श्री अपत्रमां विधान 15. श्री स्प्राण्यत्र विधान 16. श्री ग्राणित्र विधान 17. निर्वाण क्षेत्र विधान 18. श्री व्यत्मां विधान 19. श्री पुण्यत्र विधान 14. श्री अपत्रमां विधान 15. श्री धार्मां विधान 15. श्री धार्मां विधान 16. श्री शार्मित कुंधु अरहनाथ विधान 17. साव्रक क्रताथ 18. श्री अरहनाथ विधान 18. श्री अरहनाथ विधान 19. श्री मिलाश विधान 19. श्री मिलाश विधान 19. श्री मिलाश विधान 20. श्री मृत्रमुल्य विधान 21. श्री मिलाश विधान 22. श्री मेमिलाश विधान 23. श्री प्रकृतनाथ विधान 24. श्री मिलाश विधान 25. पंच पर्यक्षित विधान 26. प्रमोकार प्रकृत । 27. प्रवतास प्रण्डल विधान 28. माम्यक्त विधान 29. श्रा कर्क विधान 20. प्रणामका प्रण्डल विधान 20. प्रणामका प्रण्डल विधान 20. प्रणामका प्रण्डल विधान 21. प्रकृत विधान 22. क्री मिलाश विधान 23. क्री प्रकृत विधान 24. एक्य क्री प्रकृत । 25. प्रणामका विधान 26. प्रणामका प्रण्डल विधान 27. स्वाह क्री विधान 28. श्री माम्यक्त विधान 29. क्रा क्रकत्रण प्रकृत । 20. प्रणामका विधान 21. प्रणामका विधान 22. क्री माम्यक्त विधान 23. क्री प्रकृत विधान 24. एक्य क्रीम प्रकृत विधान 25. प्रणामका विधान 26. प्रणामका विधान 27. स्वाह क्री विधान 28. श्री ग्री क्री विधान 29. क्रा विधान 20. प्रणामका विधान 20. प्रणामका विधान 21. प्रणामका विधान 22. क्री क्री विधान 23. क्री प्रकृत प्रणामका विधान <li< td=""><td></td><td></td><td></td></li<>			
 5.5. लयु मुलंकुयव विवास 5.6. लयु मुलंकुयव विवास 5. शी प्रवत्माय पणडल विवास 6. शी परमप्रम् मण्डल विवास 7. शी प्रवाप्त विवास 8. शी परमप्रम् मण्डल विवास 8. शी परमप्रम् मण्डल विवास 9. शी प्रवत्माय विवास 10. शी गीतनाथ विवास 11. शी शेयांसमाथ विवास 12. शी वास्पुण्य विवास 13. शी विवासनाथ विवास 14. शी अनतनाथ विवास 15. शी वास्पुण्य विवास 16. शी शातिनाथ विवास 17. तालाई मुझ विवास (लघु) 18. शी विवास विवास 19. शी मिम्मुलाय विवास 10. शी गीतनाथ विवास 10. शी गीतनाथ विवास 10. शी गीतनाथ विवास 11. शी बहुं मण्डल विवास 12. तालाई मुझ विवास (लघु) 13. शी विवास विवास 14. शी अत्रताथ विवास 15. शी वर्षमाथ विवास 16. शी शातिनाथ विवास 17. शी बहुं मण्डल विवास 18. शी पार्टननाथ विवास 19. शी मिम्मुकताथ विवास 10. शी मामुकताथ विवास 10. पार्यक्षा मामुकताथ विवास 10. शी मामुकताथ विवास 10. पार्यक्षा मामुकताथ विवास 10. शी मामुकताथ विवास 10. पार्यक्षा मामुकताथ 10. पार्यक्षा मामुकताथ 10. पार्यक्षा मामुकताथ<td></td><td></td><td></td>			
5. श्री सुम्प्रान्थ मण्डल विधान 6. श्री यह्मण्य भण्डल विधान 7. श्री सुपार्श्वनाथ विधान 7. श्री सुपार्श्वनाथ विधान 7. श्री सुपार्श्वनाथ विधान 7. श्री मुण्यत्व विधान 7. श्री मुण्यत्व विधान 7. श्री मुण्यत्व विधान 7. श्री यह विधान			
9. श्री प्रणयन्त्र विधान 9. श्री प्रणयन्त्र विधान 10. श्री शतित्रनाव विधान 10. श्री शतित्रनाव विधान 11. श्री श्रेवांसमाव विधान 12. श्री वासमुण्य विधान 13. श्री वेयसन्ताव विधान 14. श्री अनत्त्राव विधान 15. श्री वास्तेणव विधान 16. श्री शांतिनाव विधान 17. शांत्रक ब्रत्न विधान 17. शांत्रक ब्रत्न विधान 17. शांत्रक ब्रत्न विधान 18. श्री अस्तिनाव विधान 17. शांत्रक ब्रत्न विधान 18. श्री अस्तिनाव विधान 19. श्री मोलिलाव विधान 19. श्री मोलाव विधान 19. श्री मोलाव विधान 19. श्री मोलाव विधान 19. श्री मोलाव विधान 19. श्री मालाव विधान 10. एकत्या	5. श्री सुमतिनाथ मण्डल विधान		128. नवदेवता विधान (वृहद)
9. श्री प्रणयन्त्र विधान 9. श्री प्रणयन्त्र विधान 10. श्री शतित्रनाव विधान 10. श्री शतित्रनाव विधान 11. श्री श्रेवांसमाव विधान 12. श्री वासमुण्य विधान 13. श्री वेयसन्ताव विधान 14. श्री अनत्त्राव विधान 15. श्री वास्तेणव विधान 16. श्री शांतिनाव विधान 17. शांत्रक ब्रत्न विधान 17. शांत्रक ब्रत्न विधान 17. शांत्रक ब्रत्न विधान 18. श्री अस्तिनाव विधान 17. शांत्रक ब्रत्न विधान 18. श्री अस्तिनाव विधान 19. श्री मोलिलाव विधान 19. श्री मोलाव विधान 19. श्री मोलाव विधान 19. श्री मोलाव विधान 19. श्री मोलाव विधान 19. श्री मालाव विधान 10. एकत्या	6. श्री पर्दमप्रभु मण्डल विधान	67. चारित्र शुद्धीव्रत विधान	129. ऋषि मण्डल विधान (वृहद)
9. श्री पुण्यत्त विधान 11. श्री श्रेयांसमध्य विधान 12. श्री वासुपुऱ्य विधान 13. श्री विधानलाथ विधान 14. श्री अनतनाथ विधान 15. श्री वर्षमानाथ विधान 16. श्री शांतिनाथ विधान 17. श्री वहुंबुनाथ विधान 17. श्री वहुंबुनाथ विधान 18. श्री असहमाथ विधान 19. श्री मोलिनाथ विधान 10. श्री मोलिनाथ विधान 11. श्री के महालीर विधान 12. श्री मोलिनाथ विधान 12. श्री मोलिनाथ विधान 13. संवर्ष विधान 14. श्री अप्रकृत व्याव विधान 15. पंचर परमेली विधान 18. समेवर विधान 18. समेवर विधान 19. श्री परमेलाथ विधान 19. श्री परमेलाथ विधान 19. श्री परमेलाथ विधान 19. श्री अप्रकृत विधान 10. एको पायो परमेला विधान 11. परमेल विधान 11. परमेल विधान 12. कालो थीमी विधान 13. सरव्या विधान 13. सरव्या विधान 14. श्री श्री अप्रवृत्य विधान 15. सर्वेदा विधान 16. एको परमेलाथ विधान 17. सरवा विधान 18. समेवर विधान 18. श्री अर्देव विधान 19. श्री परमेलाथ विधान 10. एको परमेलाथ विधान 10. एको परमेलाथ विधान 10. एको परमेलाथ विधान 10. एको परमेलाथ विधान 11. परमेलाथ विधान 12		68. क्षायिक नव लब्धी विधान	130. नवगृहशांति विधान (वृहद)
10. श्री शंगीतलाश विधान 11. श्री व्यासुपूर्ण विधान 13. श्री विमलाश विधान 13. श्री विमलाश विधान 14. श्री आनताथ विधान 15. श्री वासुपूर्ण विधान 15. श्री वासुपूर्ण विधान 15. श्री वासुपूर्ण विधान 16. श्री गार्तिगाथ विधान 17. श्री कृंबुनाथ विधान 18. श्री अत्तृताथ विधान 18. श्री अत्तृताथ विधान 19. श्री महिनाय विधान 10. श्री मृतिसुतनाथ विधान 10. श्री म्तिसुतनाथ विधान 10. श्री मुत्तुतनाथ विधान 10. श्री मुत्तुत्व मुत्तुत्व विधान 10. मुत्तुत्व	8. श्री चन्द्रप्रभु विधान	69. लघु स्वयंभू स्तोत्र विधान	131. पंच बालयति विधान (वृहद)
11. श्री वेयासनाथ विध्यान 12. श्री वासुपुर्च विध्यान 13. श्री वेयसननाथ विध्यान 14. श्री अनतनाथ विध्यान 15. श्री वास्ताय विध्यान 16. श्री शांतिनाथ विध्यान 17. श्री वर्त कुर्जा विध्यान 17. श्री वर्त विध्यान 17. श्री वर्त कुर्जा विध्यान 17. श्री वर्त वर्त विध्यान 17. श्री वर्त वर्त विध्यान 17. श्री वर विध्यान 17. श्री वर वर्त विध्यान 17. श्री वर वर विध्			
12. श्री वेमलनाथ विधान 13. श्री वेमलनाथ विधान 14. श्री अनतनाथ विधान 15. श्री धर्मनाथ विधान 15. श्री धर्मनाथ विधान 16. श्री शामिनाथ विधान 17. श्री कृंधुनाथ विधान 17. श्री कृंधुनाथ विधान 18. श्री असहनाथ विधान 19. श्री महिनाथ विधान 10. श्री मुनिमुवनाथ विधान 20. श्री मुनिमुवनाथ विधान 21. श्री निमाथ विधान 22. श्री नेमिनाथ विधान 23. श्री पाप्रनेताथ विधान 23. श्री पाप्रनेताथ विधान 24. श्री महासी विधान 25. एंच परमेण्डी विधान 26. एप्रमोकार मण्डल विधान 27. परकापर मण्डल विधान 27. परकापर मण्डल विधान 28. सम्मेन शिखा विधान 29. श्रत क्ष्मं वर्ष विधान 29. श्रत क्षमं वर्ष विधान 30. व्याग पण्डल विधान 31. पंजकल्याणक विधान 32. विकाल वोधीसी विधान 33. कल्याण मंदिर विधान 34. लेषु समयग्रण विधान 35. सर्वरीय प्रायंक्त विधान 36. एंच्योफ विधान 37. स्वाप प्रमंत्र विधान 38. श्री घंवलेश्वर पाप्रवंनाथ विधान 39. विनागण सम्मार्ग विधान 40. एक्षमेणव त्यान 41. क्षमिण्डल विधान 42. विषापहार स्त्रोत विधान 43. वृद्ध सम्मार्ग मुक्स विधान 44. व्याप पुण्डल विधान 45. एच्या सम्मार्ग विधान 46. एव्योफ विधान 47. मुम्य विधान 48. श्री अस्ति विधान 49. कृंद स्वाप (वृद्ध) 40. एक्षमेणव त्यान 40. एक्षमेणव त्यान 41. कृंद स्वाप विधान 42. विषापहार स्त्रोत विधान 43. कृंद सम्मारणविधान 44. वृद्ध स्त्रोत विधान 45. एच्या सम्मार्ग विधान 46. एव्योफ विधान 47. मुम्य विधान 48. श्री व्यान (वृद्ध) 48. श्री गातियाव विधान 49. त्या समय विधान 40. एक्समं विधान 40. एक्समं विधान 41. क्षमं विधान 42. विधान 43. कृंद मुम्य विधान 43. कृंद मुम्य विधान 44. विद्य स्त्रोत विधान 45. एच्या सम्मेरण विधान 46. एव्योफ विधान 47. च्रा सम्मेरणविधान 48. श्री विधान 49. त्या सम्मेरणविधान 49. त्या सम्मेरणविधान 49. त्या सम्मय विधान 40. एक्समं विधान 40. वृद्ध अपिष् विधान 40. एक्समं विधान 40. वृद्ध अपिष विधान 40. एक्समं विधान 40. वृद्ध अपिष विधान 40. वृद्ध अपिष विधान 40. वृद्ध अपिष विधान 40. वृद्ध अपिष विधान 40. वृद्ध अपि			
14. श्री अनन्तनाथ विधान 75. सप्तब्रहीव विधान 75. श्री वर्षमानाथ विधान 76. श्री शांति तृंचू अरहताथ विधान 77. श्रावक त्रत रोष 77. श्रावक त्रत राष 77. श्रावक त्रत राष राष			
14. श्री अमतनाथ विधान 15. श्री धर्मनाथ विधान 16. श्री शातिनाथ विधान 17. श्री संत्रुपत्र विधान 17. श्री संत्रुपत्र विधान 18. श्री अपतनाथ विधान 19. श्री मिल्मुलनाथ विधान 20. श्री मृत्मिमुलनाथ विधान 21. श्री मेमिनाथ विधान 22. श्री मेमिनाथ विधान 23. श्री पार्थनाथ विधान 24. श्री महावि विधान 25. पंच परमेखी विधान 25. पंच परमेखी विधान 26. पामोकार मण्डल विधान 27. मक्तामर मण्डल विधान 28. सम्मेद शिखा विधान 28. सम्मेद शिखा विधान 29. श्रुत क्ला विधान 20. श्री मुत्ति विधान 21. श्री मेमिनाथ विधान 22. श्री नेमिनाथ विधान 23. श्री पार्थनाथ विधान 24. श्री महावि विधान 25. पंच परमेखी विधान 26. पामोकार मण्डल विधान 27. मक्तामर मण्डल विधान 28. समेद शिखा विधान 29. श्रुत क्ला विधान 29. श्रुत क्ला विधान 29. श्रुत क्ला विधान 29. श्रुत क्ला विधान 20. श्री मुत्ति विधान 20. श्री मुत्ति विधान 20. श्री मुत्ति विधान 21. स्वि विधान 22. श्री क्ला विधान 23. श्री पार्थनाथ विधान 24. विधान 25. पंच परमेखी विधान 26. पामोकार मण्डल विधान 27. पास्तु विधान 28. समेद शिखान 29. सहाव्या विधान 29. सहाव्या विधान 29. श्रुत क्ला विधान 20. श्री मुत्ति विधान 20. श्री मुत्ति विधान 20. श्री मुत्ति विधान 21. स्व विधान 22. श्री क्ला विधान 23. श्री पार्य क्ला विधान 24. विधान 25. पंच परमेखी विधान 26. पार्म क्ला विधान 27. पार्म विधान 28. समेद शिखान 29. श्री क्ला विधान 20. याम पर्ण क्ला विधान 20. प्ली मुल्ल क्ला विधान 20. याम पर्ण विधा			
16. श्री शर्माताष विध्यान 17. श्री बंकुत्माथ विध्यान 18. श्री अरहनाथ विध्यान 19. श्री महिन्माथ विध्यान 19. श्री महिन्माथ विध्यान 21. श्री मृतिमुक्तनाथ विध्यान 22. श्री मेनिमाथ विध्यान 23. श्री पार्श्वनाथ विध्यान 24. श्री महानाथ विध्यान 25. एकं पर्माथ विध्यान 26. णामोकार मण्डल विध्यान 27. मरकतामर मण्डल विध्यान 28. मोकामरा पुण्णाति विध्यान 29. श्रत क्षेत्र विध्यान 21. श्री महानाथ विध्यान 24. श्री महानाथ विध्यान 25. एकं पर्माथ विध्यान 26. णामोकार मण्डल विध्यान 27. मरकतामर मण्डल विध्यान 28. मानेकामरा पुण्णाति विध्यान 28. मानेकामरा पुण्णाति विध्यान 29. श्रत क्षेत्र विध्यान 29. श्रत क्षेत्र विध्यान 29. श्रत क्षेत्र विध्यान 29. श्रत क्ष्त्र विध्यान 20. वामा मण्डल विध्यान 21. श्री महावीर विध्यान 22. विष्णाद विध्यान 23. काल्याण मिंदर विध्यान 24. विष्णाद विध्यान 25. काल्याण मिंदर विध्यान 26. एकं मन्दिण्य विध्यान 27. पर्वाण मिंदिण विध्यान 28. काल्याण मिंदर विध्यान 29. श्रत क्ष्त्र विध्यान 29. श्रत क्ष्य विध्यान 29. श्रत क्ष्त्र विध्यान 29. श्रत क्ष्त्र विध्यान 29. हात क्ष्त्र क्ष्य विध्यान 20. विध्यान विध्यान 21. विध्यान विध्यान 22. विष्णाद रिवाण विध्यान 23. काल्याण मिंदर विध्यान 24. वीध्यान पर्वाण विध्यान 25. क्ष्त्र क्ष्यान विध्यान 26. एकं मन्दिण विध्यान 27. पर्वाण क्ष्य विध्यान 28. श्री आतिताथ विध्यान (प्राच्य) 29. काल्याण किष्यान (व्व्य) 29. काल्याण मिंदर विध्यान 29. काल्याण किष्यान (व्यान) 29. काल्याण किष्या (व्वान) 20. पर्वाण क्ष्याण विध्यान 21. विध्यान (व्वान) 22. विष्याक स्थान (व्वान) 23. काल्याण किष्यान (व्वान) 24. वीध्याम (व्वान) 25. काल्याण किष्या (व्वान) 26. पर्वाण क्ष्याण विध्यान 27. काल्याण किष्या (व्वान) 28. श्रीपमण्डल विध्यान (व्वान) 29. काल्याण विध्यान 29. काल्याण किष्या (व्वान) 29. काल्याण विध्या (व्वान) 29. काल्याण विध्यान (व्वान) 29. काल्याण विध्या (व्वान) 2			
16. श्री आंतिनाथ विधान 17. श्री क्षुंतुनाथ विधान 19. श्री मल्लिनाथ विधान 19. श्री मल्लिनाथ विधान 20. श्री मुनिसुद्रतनाथ विधान 21. श्री नमिनाथ विधान 22. श्री नमिनाथ विधान 23. श्री पार्ट्यनीथ विधान 24. श्री महावीर विधान 25. पंच पर्रमेखी विधान 26. पामोकार मण्डल विधान 27. भावताथ स्थान 28. समेब शिखर विधान 29. श्रुत रुक्का विधान 29. श्रुत रुक्का विधान 20. प्राप्ता मण्डल विधान 21. श्री नमिनाथ विधान 22. श्री नमिनाथ विधान 23. प्रकाम मण्डल विधान 24. श्री महावीर विधान 25. पंच पर्रमेखी विधान 26. पामोकार मण्डल विधान 27. भावताथ स्थान (मामोव) 28. समेब शिखर विधान 29. श्रुत रुक्का विधान 29. श्रुत रुक्का विधान 30. याग मण्डल विधान 30. याग मण्डल विधान 31. पंच हर्णाण स्थान 32. त्रिकाल चौबीसी विधान 33. कल्लाण मिरि विधान 34. लघु सम्बद्धान विधान 35. सर्वंदोष प्राथमिय विधान 36. पंचोर विधान 37. लघु नचीयवर विधान 38. श्री अंदललेश्वर पायर्थनाथ विधान 39. एक्का मण्डल विधान 40. एक्कीभाव स्तेत्र विधान 41. क्षायण्डल विधान 42. विधान स्तेत्र विधान 42. विधान स्तेत्र विधान 43. व्हद भवताम विधान 44. वास्तु मण्डल विधान 45. लघु नवाइ ग्रातिमण्डल विधान 46. सूर्व अरिप्ट निवारक 47. चीसल क्रांद्रिवाय 48. कर्मवहन पण्डल विधान 49. लघु नववेवतर विधान 40. एक्कीभाव स्तेत्र विधान 41. मुण्य अर्थन पण्डल विधान 42. विधान स्तेत्र विधान 43. अर्वद मुक्त विधान 45. प्रचाम विधान विधान 46. एक्का माम विधान 47. प्रचाम विधान 48. श्री अर्वातिवाय विधान 48. श्री अर्वातिवाय विधान 49. हिक्त विधान 49. हिक्त विधान 49. हिक्त विधान 40. एक्का माम विधान 41. विधान विधान 42. ध्री मुक्त विधान 43. अर्वंद्र भिद्या (बुद्ध) 44. विदेह क्षेत्र विधान (बुद्ध) 44. विदेह क्षेत्र विधान (बुद्ध) 45. हिक्त विधान 46. हिक्त विधान 47. हिक्त विधान 48. श्री अर्वात्व विधान (च्हुह) 47. श्री विधान 48. श्री विधान (मुद्ध) 48. श्री विधान 49. हिक्त विधान 49. हिक्त विधान 49. हिक्त विधान 49. हिक्त विधान 40. एक्का विधान (च्हुह) 40. हिक्त विधान 41. हिक्त विधान 41. हिक्त विधान 41. हिक्त विधान 42. ध्री विधान (मुद्ध) 44. विदेह क्षेत्र विधान (च्हुह) 44. विधेत विधान 45. हिक्त विधान 46. एक्का विधान (च्हुह) 48. हिक्त विधान (च्हुह) 48. हिक्त विधान (च्हुह) 48. हिक्त विधान (च्हुह) 49. हिक्त विधान (च्हुह) 40. हिक्त विधान (च्हुह) 40			
78. तीं खंकर पंचकल्याणक तीर्थ विधान 79. सम्यक् दर्शन विधान 79. सम्यक् स्वाचन विधान 79. सम्यक् स्वचान विधान 79. सम्यक्त स्वचान विधान 79. सम्यक्त विधान 79. सम्यक्त स्वचान विधान 79. सम्यक्त			
18. श्री आस्तिवाय विधान 19. श्री मिल्लाय विधान 20. श्री मुत्तमुलताय विधान 21. श्री निस्ताय विधान 22. श्री नेमिनाय विधान 23. श्री पार्थनाय विधान 24. श्री महावार विधान 25. पंच परमेष्ठी विधान 25. पंच परमेष्ठी विधान 26. णामोकार मण्डल विधान 27. भक्तामर मण्डल विधान 28. सामेत श्री खान 28. श्री महावार विधान 28. सामेत श्री खान 29. श्री रक्षा विधान 28. सामेत श्री खान 29. श्री रक्षा विधान 29. सामेत श्री प्राचित विधान 29. काले सामेत विधान 29. काले सामेत विधान 29. काले सामेत विधान 29. काले सामेत विधान 20. व्यास्त विधान 20. काले स्वीत विधान 20. काले सामेत विधान 20			
9. श्री मिल्लाख विद्यान 81. चारित्र शुद्धिद्वत विद्यान (जाय) 82. मनेतमाना पूर्णशांति विद्यान (जाय) 83. करिल्कुण्ड पार्ण्वनाथ विद्यान 84. सीर्थंकर एंचकरूल्याणक तिथि विद्यान 85. विजयश्री विद्यान 86. श्री आवित्ताथ विद्यान (जाय) 87. श्री आविताथ विद्यान (जाय) 88. श्री आविताथ विद्यान (जाय) 87. श्री आविताथ विद्यान (जाय) 88. श्री आविताथ विद्यान (जाय) 89. यूट वण्डणाम विद्यान (जाय) 90. विद्य वेशाना विद्यान (जाय) 91. श्री आविताथ विद्यान (जाय) 92. नवजष्ठ शांति विद्यान (जाय) 92. नवजष्ठ शांति विद्यान (जाय) 93. स्थावन्यन विद्यान (जाय) 94. तीर्थंकर विद्यान (जाय) 94. तीर्थंकर विद्यान (जाय) 95. गण्यायत्वलय विद्यान (जाय) 95. गण्यायत्वलय विद्यान (जाय) 96. तीर्यंकर विद्यान (जाय) 97. श्री चन्द्रप्रमु विद्यान (जाय) 98. व्यावस्थान (जाय) 98. व्यावस्थान (जाय) 98. व्यवस्थान (जाय) 99. कालसर्य वेशान (ज्वात्व) 99. कालसर्य वेशान विद्यान (ज्वात्व) 99. कालसर्य वेशान विद्यान (ज्वात्व) 99. कालसर्य वेशान (ज्वात्व) 99. कालसर्य वेशान विद्यान (ज्वात्व) 99. कालसर्य वेशान विद्यान (ज्वात्व) 99. कालसर्य वेशान विद्यान (ज्वात्व) 99. कालसर्य वेशान (ज्वात्व) 99. कालसर्य वेशान (ज्वात्व) 99. कालसर्य व्यावन (ज्वात्व) 99. कालसर्य व्यावन (ज्वात्व) 99. कालसर्य विद्यान (ज्वात्व) 99. कालसर्य विद्यान (ज्वात्व) 99. कालसर्य विद्यान (ज्वात्व) 99. कालस्य विद्यान			
20. श्री मुनिस्तुवनाथ विधान 21. श्री मुनिस्तुवनाथ विधान 22. श्री नीमाध विधान 23. श्री पार्श्वाथ विधान 24. श्री महाविद विधान 25. पंच परमेखी विधान 26. णमोकार मण्डल विधान 27. पक्तामर मण्डल विधान 28. श्री आदिनाथ विधान 29. श्रुत स्कंध विधान 30. याम मण्डल विधान 31. पंचकत्याणक विधान 32. त्रिकाल चौबीसी विधान 33. कल्याण मंदिर विधान 34. लांचु मम्ब्याण विधान 35. सर्वदोष प्रायिच्या 36. पंचमेर विधान 37. लांचु न्वरियुव्य विधान 38. श्री चंवसल्य विधान 39. हमाध्य विधान 30. विधान 30. हमाध्य विधान 30. हम			
2. श्री नीमनाथ विधान 2. श्री नोमनाथ विधान 2. श्री नोमनाथ विधान 2. श्री महावीर विधान 3. कल्याण मंदिर विधान 3. क्षी चंवरोक्षय पाप्रर्वनाथ विधान 3. कल्याण मंदिर विधा			
22. श्री नेमिनाथ विधान 23. श्री पाएवंनाथ विधान 24. श्री महावीर विधान 25. पंच परमेष्ठी विधान 26. पामेकार मण्डल विधान 27. प्रवतामर एण्डल विधान 28. सम्मेद शिखर विधान 29. श्रुत स्क्रंघ विधान 29. श्रुत स्क्रंघ विधान 29. श्रुत स्क्रंघ विधान 21. प्रवतामर पण्डल विधान 22. विधान 23. कर्लणाण सिंदा विधान 24. त्याप प्रवत्न विधान 25. पंच परमेष्ठी विधान 26. पामेकार मण्डल विधान 27. प्रवतामर पण्डल विधान 28. सम्मेद शिखर विधान 29. श्रुत स्क्रंघ विधान 29. श्रुत स्क्रंघ विधान 20. प्रवाप स्वित्न विधान 20. प्रवाप स्वित्न विधान 21. प्रवक्त विधान 22. विधान 23. कर्लणाण सिंद विधान 24. त्याप मस्वर्गरण विधान 25. पण्डल विधान 26. पामेक स्वत्न विधान 27. प्रवक्त विधान 28. संमेद शिखर विधान 29. त्याप प्रवित्न विधान 29. त्याप प्रवित्न विधान 20. प्रवाप स्वित्न विधान 20. प्रवाप स्वित्न विधान 21. प्रवित्व विधान 22. विधान 23. कर्लणाण सिंद विधान 24. त्याप स्वत्न विधान 25. प्रवच्य विधान 26. प्रवच्य विधान 27. क्ष्य स्वत्व स्वित्व विधान 28. संस्वती विधान 29. त्याप प्रवच्य विधान 29. त्याप प्रवच्य विधान 20. प्रवच्य विधान 20. प्रवच्य विधान 20. प्रवच्य विधान 21. विधान 22. विधान 23. क्ष्य प्रवच्य विधान 24. त्याप प्रवच्य विधान 25. क्षय क्षय विधान 26. प्रवच्य विधान 27. क्षय क्षय विधान 28. संस्व विधान 29. यून स्वर्ण विधान 20. विधान 20. विधान 20. विधान 20. विधान 20. विधान 20. विधान 21. विधान 22. विधान 23. क्षय प्रवच्य विधान 24. त्याप क्षय विधान 25. क्षय क्षय विधान 26. प्रवच्य विधान 27. क्षय क्षय विधान 28. श्री आतिवाय विधान 29. यून स्वर्ण विधान 29. प्रवच्य विधान 29. क्षय क्याप (स्वाय) 29. क्षय क्षय विधान 20. विधान (द्वर) 20. विधान (त्वर्व) 215. व्याप (वृह्द) 215. व्याप (वृह्			
23. श्री पार्श्वनाथ विधान 24. श्री महावीर विधान 25. पंच पर्राथि विधान 26. एमोकार मण्डल विधान 27. प्रकासर मण्डल विधान 28. सम्मेद शिखर विधान 28. सम्मेद शिखर विधान 29. श्रुत स्कंध विधान 29. श्रुत स्कंध विधान 29. श्रुत स्कंध विधान 29. व्याप मण्डल विधान 20. व्याप विधान 20. व्या			
24. श्री महाबीर विधान 86. श्री आदिनाथ विधान (प्रानीला) 87. श्री शांतिनाथ विधान (प्रानीला) 88. श्री आदिनाथ विधान (प्रानीला) 89. षट् खण्डागाम विधान 90. विव्य देशना विधान 91. श्री आदिनाथ विधान (प्रानीला) 89. पट् खण्डागाम विधान 91. श्री आदिनाथ विधान (प्रानीला) 89. पट् खण्डागाम विधान 92. नवग्रह शांति विधान 93. रक्षाव्यन्य विधान (व्याव (प्रानीला) 89. प्रवाव विधान 152. चौसठ ऋदि विधान 154. चूलगिरि विधान 155. पंचपरभेण विधान 156. तीस चौबीस विधान 157. यांचर श्री विधान 158. पुष्पांजिल विधान 159. वांचरी विधान 150. वांचर विधान 150.			
25. पंच परमेष्ठी विधान 26. प्रामेकार पण्डल विधान 27. प्रस्तास पण्डल विधान 28. सम्मेव शिखर विधान 29. स्त स्कंध विधान 30. याग मण्डल विधान 31. पंचकत्याणक विधान 32. त्रिकाल चौबीसी विधान 33. कल्याण मंदिर विधान 34. लघु समयशरण विधान 35. सर्वरोष प्रायिश्वाव विधान 36. पंचमेर विधान 37. त्यु नन्दीयर विधान 38. श्री व्यातनाथ पंचकत्वाणक विधान 38. स्वर्वरोष प्रायिश्वाव विधान 39. देशां विधान 31. क्रां क्रां विधान 32. त्रिकाल चौबीसी विधान 33. कल्याण मंदिर विधान 34. लघु समयशरण विधान 35. सर्वरोष प्रायिश्वाव विधान 36. पंचमेर विधान 37. त्यु नन्दीयर विधान 38. श्री चंवलंश्वर पार्थनाथ विधान 39. इत्यापण्डल विधान 39. इत्यापण्डल विधान 30. याग मण्डल विधान 31. क्रां विधान 35. सर्वरोष प्रायिश्वाव विधान 36. पंचमेर विधान 37. त्यु नन्दीयर विधान 38. श्री चंवलंश्वर पार्थनाथ विधान 39. इत्यापण्डल विधान 30. व्यापण्डल विधान 31. क्रां क्			
27. भक्तामर मण्डल विधान 28. सम्मेद शिखर विधान 29. श्रुत रुकंध विधान 30. याग पण्डल विधान 31. पंचकल्याणक विधान 31. पंचकल्याणक विधान 32. त्रिकाल चौबीसी विधान 33. कत्याण मिदिर विधान 34. लघु समवशरण विधान 35. सर्ववंध प्रायिष्ठव विधान 36. पंचमेह विधान 37. लघु नव्यंष्ठियर विधान 38. श्री चंवलेश्वर पाप्रवंनाथ विधान 39. इसावस्थान विधान 39. इसावस्थान विधान 39. स्वावस्थान (लघु) 38. श्री चंवलेश्वर पाप्रवंनाथ विधान 39. क्राव्मण्डल विधान 39. क्राव्मण (लघु) 39. क्राव्मण (लघुण)	25. पंच परमेष्ठी विधान	86. श्री आदिनाथ विधान (रानीला)	147. सोलहकारण भावना विधान (वृहद)
28. सम्मेव शिखर विधान 29. शूत रुकंध विधान 30. याग पण्डल विधान 31. पंचकल्याणक विधान 32. विकाल चौंबीसी विधान 33. कल्याण मंदिर विधान 34. लघु समवशरण विधान 35. सर्वदोष प्रायश्चित विधान 36. पंचमेर विधान 37. लघु नर्वाश्चर विधान 38. श्री चंबलेश्चर पार्श्वनाथ विधान 39. कालसर्प विधान 39. कालसर्प विधान 39. कालसर्प विधान 39. कालसर्प विधान 31. संचतेष प्रायश्चित विधान 32. पंचमेर विधान 33. कल्याण मंदिर विधान 34. लघु नर्वाश्चर विधान 35. सर्वदोष प्रायश्चित विधान 36. पंचमेर विधान 37. लघु नर्वाश्चर विधान 38. श्री चंबलेश्चर पार्श्वनाथ विधान 39. कालसर्प वेधान (द्वितीय) 30. व्याग प्रायश्चति विधान 31. क्वांवलश्वर पार्श्वनाथ विधान 32. विधान (द्वितीय) 33. कल्यच्चियान (द्वितीय) 34. लघु नर्वाश्वर विधान 35. लघु नर्वाश्वर श्रोत विधान 36. पंचमेर विधान 37. लघु नर्वाश्वर शांति विधान 38. कल्यच्चा विधान 39. कालसर्प वेधान (द्वित्य) 30. व्याग प्रायश्चति विधान 310. व्वावस्वति विधान 310. विधान (च्वाविधान (च्वाविधान (व्वावस्वाविधान (च्वावस्वावस्वावस्वावस्वावस्वावस्वावस्वाव	26. णमोकार मण्डल विधान	87. श्री शांतिनाथ विधान (सामोद)	
29. श्रुत स्कंध विधान 90. दिव्य देशना विधान 150. जीबीस तीर्थंकर विधान (वृहतीर (वृहत) 30. याग गण्डल विधान 91. श्री आदिनाध विधान (वृहत) 31. पंजकल्याणाक विधान 92. नवग्रह शांति विधान 151. कल्यदुम विधान 33. कल्याण मंदिर विधान 93. रक्षाबन्धन विधान 152. जौसठ ऋढि विधान (लघु) 34. लघु समकारण विधान 95. गण्डम स्वत्य विधान (लघु) 153. (कांजीबारस) श्रावण द्वादशी विधान 36. पंचमेरु विधान 97. श्री चन्द्रप्रभू विधान (तिजारा) 155. पंचसठ अदिधान 38. श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाध विधान 97. श्री चन्द्रप्रभू विधान (तिजारा) 156. तीर चौबीस विधान 39. जनगुण सम्पत्ति विधान 97. श्री चन्द्रप्रभू विधान (तिजारा) 158. पूर्वपारमेटी विधान 40. एकीभाव स्तोत्र विधान 100. वास्तु विधान (हितीय) 158. पूर्वपारमेटी विधान 41. ऋषिमण्डल विधान 102. प्रत्मावती विधान 159. कल्त्यप्रमेटी विधान 42. विधापहार स्त्रोत विधान 102. प्रत्मावती विधान 160. सोल्यस्त्रोत विधान 43. वृहद भक्तामर स्त्रोत विधान 104. बहे बाबा विधान 162. प्रातिभिण्डल विधान 44. वास्तु भण्डल विधान 105. कल्पदुम विधान (लघु) 164. कैर-य भिल्य विधान 45. लघु नवग्रह शातिमण्डल विधान 108. चान्द्रपुम महावीर विधान 165. श्री ऋषभ्य विधान 47. चारेस क्रावेद विधान 109. श्री शाति विधान			149. चौबीस तीर्थंकर निर्वाण भक्ति विधान
30. याग मणडल विधान 91. श्री आदिवाण विधान 151. कल्यपुम विधान 151. कल्यपुम विधान 32. विकाल चौबोसी विधान 93. रक्षाबन्धन विधान 152. चौसठ ऋदि विधान 152. चौसठ ऋदि विधान (लयु) 34. लघु समवशरण विधान 95. गणधरवल्य विधान (लयु) 153. (कांजीबारस) आवण द्वावशी विधान 154. चूलगिर विधान 35. सर्वदोष प्रायश्चित विधान 95. गणधरवल्य विधान (लयु) 155. (कांजीबारस) आवण द्वावशी विधान 155. (कांजीबारस) आवण द्वावशी विधान 36. पंचमेर विधान 95. गणधरवल्य विधान (त्वारा) 155. (कांजीबारस) आवण द्वावशी विधान 155. (कांजीबारस) आवण द्वावशी विधान 37. लघु नर्वरिथर विधान 96. गिरनार गिर विधान 155. पंचरपरेमछी विधान 155. पंचरपरेमछी विधान 38. श्री चंवलेश्वर पारर्वनाथ विधान 99. कालसर्प वेधान (द्वितीय) 155. पंचरपरेमछी विधान 155. पंचरपरेमछी विधान 40. एकीभाव स्तोत्र विधान 100. वास्तु विधान (द्वावा) 155. पंचरपरेमछी विधान 157. आकाश पंचरी विधान 41. ऋषिमण्डल विधान 101. भक्तासर्प विधान 102. पद्मावती विधान 159. वर्वावि विधान 160. पाचरिक्षान 160. गंपलि विधान 160. गंपलि विधान 160. केवल्यलस्त्रभी प्रापि विधान 162. शांतिभिक्षान 162. शांतिभाक 166. कंट्य भवित्र विधान 166. कंट्य भवित्र विधान 166. कंट्य भवित्र विधान 166. कंट्य भवित्र विधान			
31. पंचकल्याणक विधान 92. नवग्रह शांति विधान 151. कल्पदुम विधान 32. क्रिकाल चौबासी विधान 93. रक्षाबन्धन विधान 152. औसठ ऋदिब्र विधान 34. लायु समवशरण विधान 95. गणधरवलय विधान (लघु) 153. (क्रांतीबारास) आवण द्वादशी विधान 35. सर्ववोष प्रायिष्ठच विधान 96. गिरनार गिरि विधान 155. एक्परमेण्डि विधान 36. पंचमेस विधान 97. श्री चन्द्रप्रभू विधान (तिजारा) 155. पंजपरमेण्डि विधान 39. क्रतगुण सम्पत्ति विधान 100. वास्तृ विधान (द्वितीय) 156. तीस चौबीस विधान 39. क्रतगुण सम्पत्ति विधान 100. वास्तृ विधान (द्वितीय) 155. पंजपरमेण्डि विधान 40. एकीभाव स्तोत्र विधान 100. वास्तृ विधान (द्वितीय) 159. नवनिधि विधान 41. ऋषिमण्डल विधान 100. वास्तृ विधान (चोपाई) 160. संताहिक सप्त विधान 42. विषापहार स्त्रोत विधान 103. 96 क्षेत्रस्त्रा विधान 160. संताहिक सप्त विधान 44. वास्तृ मण्डल विधान 105. कल्पदुम विधान (लघु) 160. संताहिक सप्त विधान 44. वास्तृ मण्डल विधान 105. कल्पदुम विधान (लघु) 164. चूंय प्रवित विधान 46. सूर्य अर्था प्रवित विधान 109. श्री गांति विधान 165. श्री ऋषण विधान 47. चांत्र क्रा विधान 109. श्री गांति विधान 166. स्त्र क्या विधान 48. कमंदह मण्डल विधान <td></td> <td></td> <td></td>			
32. त्रिकाल जौबीसी विधान 93. रक्षाबन्धन विधान 152. जौसठ ऋद्धि विधान (लघु) 33. कल्याण मिंदर विधान 94. तीर्थंकर विधान 153. (कांजीबारस) अग्रवण द्वादग्री विधान 35. सर्वदोष प्राथिखान 95. गणधरवलय विधान (लघु) 154. जूलिगिर विधान 36. पंचमेर विधान 96. गिरनार गिरि विधान 155. जंतजीबारस) 155. जंतजीबारस) अग्रवण द्वादग्रिश विधान 37. लघु नत्यीश्वर विधान 97. श्री चन्द्रप्रभु विधान (द्वितीय) 156. तीस चौबीस विधान 156. तीस चौबीस विधान 38. श्री चंत्रवेश्वर प्रश्वर्मा विधान 100. वास्तु विधान (द्वितीय) 159. जंतनिधि विधान 159. जंतनिधि विधान 40. एकीभाव स्तोत्र विधान 100. वास्तु विधान (चिधान) 159. जंतनिधि विधान 159. जंतनिधि विधान 41. ऋषिमण्डल विधान 102. पद्मावती विधान 160. सापाहिक सप्त विधान 160. सापाहिक सप्त विधान 42. विधापहार स्त्रोत विधान 104. बड़े बाबा विधान 162. गांतिसिव्धा विधान 162. गांतिसिव्धा विधान 43. लघु नक्प्रह शांतिमण्डल विधान 105. कल्प्यहम विधान (लघु) 164. चंत्र भांति विधान 165. श्री ऋषभदेव विधान 45. लघु नक्प्रह शांतिमण्डल विधान 108. चांन्यु स्प्रमुण विधान 165. श्री ऋणभदेव विधान 166. एतंत्र विधान 47. चांसठ अस्ति विधान 108. शांति विधान (लांपु) 168. ऋढि सिधान 169			
33. कल्याण मंदिर विधान 94. तीर्थंकर विधान 153. (कांजीबारस.) श्रावण द्वादार्शो विध 34. लघु समयहारण विधान 95. गणधरवलय विधान (लघु) 154. जूलिगिर विधान 36. पंचमेर विधान 97. श्री चन्द्रप्रभु विधान (तजारा) 155. पंचसमण्डी विधान 38. श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान 99. कालसर्प वेषा निवारक कल्याण मंदिर 158. पुष्पांजलि विधान 40. एकीभाव स्तोत विधान 100. वासतु विधान (द्वितीय) 159. कत्विधान 41. ऋषिमण्डल विधान 101. भक्तामर विधान (व्यापई) 161. पल्य विधान 42. विषापहार स्र्वेत विधान 103. 96 क्षेत्रफल विधान 162. पत्यमावती विधान 43. वृद्ध क्ष क्षात्र क्यात विधान 104. बहे बाबा विधान 162. पत्यमावती विधान 44. वास्तु मण्डल विधान 105. कल्पदुम विधान (लघु) 164. चैत्रय भित्रवि विधान 45. लघु नवत्रद्ध विधान 105. कल्पदुम विधान (लघु) 164. चैत्रय भित्रवि विधान 46. सूर्य अरिस्ट निवारक 107. महावीर समयश्ररण विधान 165. श्री ऋषभवेव विधान 47. चौंसठ ऋढि विधान 108. चान्वपु प्रमुलीर विधान 166. लक्वा विधान 48. कर्मदहन मण्डल विधान 109. श्री शारित विधान 166. रलक्वा विधान 49. लघु नवरेवता विधान 109. श्री शारित विधान 167. सहाव्यम्य विधान 49. लघु अरिस्ट निवारक <t< td=""><td></td><td></td><td></td></t<>			
34. लबु समवशरण विधान 95. गणधरवलाय विधान (लघु) 154. खूलगिर विधान 36. पंचमेर विधान 96. गिरनार गिरि विधान 155. पंचपरमेण्डी विधान 37. लघु नत्वीख्यर विधान 98. इषिमण्डल विधान (द्वितीय) 155. पंचपरमेण्डी विधान 38. श्री चंद्रलोखर पाण्यंनाथ विधान 100. वास्तु विधान (द्वितीय) 155. आकाश पंचमी विधान 40. एकीभाव स्तोत्र विधान 100. वास्तु विधान (द्वेतीय) 155. अत्रकाश पंचमी विधान 41. ऋषिमण्डल विधान 101. भक्तामार विधान (चोपाई) 161. पल्य विधान 42. विषापहार स्त्रोत विधान 103. 96 क्षेत्रफल विधान 162. गातिमिक्त सत्व विधान 44. वास्तु मण्डल विधान 105. कल्यसूम विधान 162. गातिमिक्त सत्व विधान 44. वास्तु मण्डल विधान 105. कल्यसूम विधान 162. गातिमिक्त सवधान 45. लघु नवग्रह शातिमण्डल विधान 105. कल्यसूम विधान 164. चंद्र भित्व विधान 46. सूर्य अर्था विधान 105. कल्यसूम विधान 164. चंद्र भित्व विधान 47. चाँसत ऋति प्रचाप 106. केवल्यलक्षमी प्राप्ति विधान 165. श्री ऋषभवेव विधान 48. कर्मंद हा मण्डल विधान 106. केवल्यलक्षमी प्राप्ति विधान 166. रल्य विधान 49. लघु नववंद्रत विधान 108. चांद्रनेष्य विधान 166. रल्य भित्व विधान 50. सहस्ताम प्रचाप 109. श्री शा			
35. सर्वचीष प्रायश्चित विधान 96. गिरनार गिरि विधान 155. प्रंचपरमेछी विधान 36. पंचमेर विधान 97. श्री चन्द्रप्रभू विधान (तजारा) 156. तीस चौबीस विधान 37. लघु नन्दीएकर विधान 98. ऋषिपणडल विधान (द्वितीय) 155. प्रंचपरमेछी विधान 39. जिनगुण सम्पित विधान 100. वासतु विधान (द्वितीय) 158. पुष्पांजिल विधान 40. एकीभाव सतोत्र विधान 100. वासतु विधान (चोपाई) 159. नवनिध विधान 41. ऋषिमण्डल विधान 102. पद्मावती विधान 160. साताहिक सप्त विधान 44. वास्तु मण्डल विधान 104. बड़े बाबा विधान 162. शांतिभिक्त विधान 44. वास्तु मण्डल विधान 105. कल्पदुम विधान (लघु) 163. आ. शींविराग सागर विधान 46. सूर्य अरिष्ट निवारक 107. महावीर समयशरण विधान 165. श्री ऋषभदेव विधान 47. जांसठ ऋदि विधान 109. श्री शांति विधान (खणडेला) 166. रलत्रव विधान 47. जांसठ ऋदि विधान 109. श्री गांति विधान (खणडेला) 166. एलत्रव विधान 49. लघु नववेततर विधान 110. श्री पाश्चंनाध विधान (खणडेला) 168. ऋदि सिद्ध विधान 50. सहस्ताम विधान 112. कम निइर्तरत विधान 169. भरत केवली विधान 51. चारित लख्धी विधान 112. कम निइर्तरत विधान 170. सर्वतीया 52. अनन वत्रमण्डल विधान 113. निर्चंड सप्तमी व्रात विधान 171. शांविधा (त्वाचा (अण्डा)			
36. पंचमेरु विधान 97. श्री चन्द्रप्रभु विधान (तिजारा) 156. तीस चौबीस विधान 37. लघु नत्वीष्टवर विधान 98. ऋषिमण्डल विधान (द्वितीय) 157. आकाग्र पंचमी विधान 38. श्री चंत्रवेश्वर पाष्ट्रवंनाथ विधान 100. वास्तु विधान (द्वितीय) 158. प्रधांताल विधान 40. एकीभाव स्तोत विधान 100. वास्तु विधान (द्वितीय) 159. नवनिधि विधान 41. ऋषिमण्डल विधान 102. पद्मावती विधान 160. साप्ताहिक सप्त विधान 42. विधापहार स्त्रोत विधान 103. 96 क्षेत्रफल विधान 161. पत्य विधान 44. वास्तु गण्डल विधान 106. केवल्यल्लस्सी ग्राप्ति विधान 162. गांतिनिध्त तिधान 45. लघु नवग्रह शांतिगण्डल विधान 106. केवल्यल्लस्सी ग्राप्ति विधान 163. आ. श्रीविराग सागर विधान 46. सूर्य अपिट निवारक 106. केवल्यल्लस्सी ग्राप्ति विधान 165. श्री ऋषभदेव विधान 47. चौंसठ ऋद्धि विधान 108. चान्द्रगपुर महावीर विधान 165. श्री ऋषभदेव विधान 48. कर्मदहन मण्डल विधान 109. श्री शांति विधान 166. रल्वच विधान 49. लघु नव्यंतर विधान 109. श्री शांति विधान 166. रल्वच विधान 49. लघु नव्यंतर विधान 109. श्री शांति विधान 166. रल्वच विधान 49. लघु नव्यंतर विधान 109. श्री गांतिवाधा 167. रक्षाव्यंति विधान 50. सहस्त्रना विधान </td <td></td> <td></td> <td></td>			
37. लघु नर्वीश्वर विधान 98. ऋषिमण्डल विधान (द्वितीय) 157. आकाश पंचमी विधान 38. श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान 100. वास्तु विधान (द्वितीय) 158. पूप्पांजलि विधान 40. एकीभाव स्तोत्र विधान 101. भक्तामर विधान (चोपाई) 159. नविधि विधान 41. ऋषिमण्डल विधान 103. 96. क्षेत्रफल विधान 160. प्रत्य विधान 42. विषापहार स्त्रोत विधान 103. 96. क्षेत्रफल विधान 162. एतंपाविक सप्त विधान 43. वृहद भक्तामर स्त्रोत विधान 104. बच्चे बाबा विधान 162. एतंपाविक सप्त विधान 45. लघु नत्रग्रह शातिमण्डल विधान 106. केवल्यलक्षमी प्रापित विधान 163. आ. अविराग सागर विधान 46. सूर्य अरिष्ट निवारक 107. सहावीर सम्प्राप्त विधान 166. केवल्यलक्षमी प्रापित विधान 47. चौंसठ ऋद्धि विधान 108. चान्तपुर महावीर विधान 166. केवल्यलक्षमी प्रापित विधान 47. चौंसठ ऋद्धि विधान 109. श्री शार्ति विधान 166. रलत्रय विधान 48. कर्मवहन मण्डल विधान 109. श्री शार्ति विधान (शांतिनाध खाह) 166. रलत्रय भिक्त विधान 49. लघु नवरेवत प्रधान 110. श्री प्राप्त प्रधान (खान) 167. स्त्रावर विधान 50. सहस्त्रना प्रधान 111. सुर्पेत प्रधान (खान) 168. ऋदि सिधान 51. चारित लिखान 112. कर्मि पुर्तेत विधान 170. सर्वतेपात (खान)			
38. श्री चंबलेश्वर पाश्वंनाथ विद्यान 99. कालसर्प दोष निवारक कल्याण मंदिर 158. पुष्पांजलि विद्यान 39. जनगुण सम्पत्ति विद्यान 100. वास्तु विद्यान (चिर्णाय) 159. नवनिध विद्यान 40. एकीभावर सोत्र विद्यान 101. प्रवत्मार विद्यान (चोपाई) 160. सालादिक सरत विद्यान 42. विषापदार स्त्रोत विद्यान 103. 96 क्षेत्रफल विद्यान 161. पत्य विद्यान 43. वृहदभक्तामर स्तोत्र विद्यान 104. बढ़े बाबा विद्यान 162. शांतिभिक्त विद्यान 44. वास्तु गण्डल विद्यान 105. कल्यद्रम् विद्यान (खु) 164. बढ़े व्यान (चिर्णा) 46. सूर्व अस्टि तिद्यान 107. महावीर समवगरण विद्यान 165. श्री ऋषभदेव विद्यान 47. चौंसठ ऋद्वि विद्यान 109. श्री शांति विद्यान (खण्डेला) 166. रतन्त्रव विद्यान 48. कर्मदहन मणडल विद्यान 109. श्री शांति विद्यान (खण्डेला) 168. ऋद्वि सिद्ध विद्यान 49. लघु नवदेवतर विद्यान 110. श्री प्रयुक्ताच विद्यान 168. ऋद्वि सिद्ध विद्यान 50. सहस्त्रान प्रविद्यान 111. सुर्वेत सुर्या विद्यान 169. भरत केवली विद्यान 51. चारित लब्धा 112. कर्म निङ्कात विद्यान 170. सर्वेताभाद विद्यान 52. अनन व्रतमण्डल विद्यान 114. रविव्यत पूजा विद्यान 171. शांतिवाद विद्यान 53. आल्य पे पर्पेच्यो 114. रविव्यत पूजा विद्यान 172. आदिनाथ			
39, जिनगुण सम्पत्ति विधान 40. एकीभाव स्तोत्र विधान 41. ऋषिमण्डल विधान 42. विषापहार स्रोत विधान 43. वृहदभक्तामर स्तोत्र विधान 43. वृहदभक्तामर स्तोत्र विधान 44. वासनु मण्डल विधान 45. लघु मलगृह शांतिमण्डल विधान 46. सूर्य अरिष्ट निवारक 47. चाँसठ ऋद्धि विधान 48. कर्मवहन मण्डल विधान 47. चाँसठ ऋद्धि विधान 48. कर्मवहन मण्डल विधान 49. लघु नववेवतर विधान 41. ग्रामण्डल विधान 41. ग्रामण्डल विधान 42. क्षापहार स्तोत्र विधान 43. वृहदभक्तामर स्तोत्र विधान 44. वासनु मण्डल विधान 45. लघु नवगृह शांतिमण्डल विधान 46. सूर्य अरिष्ट निवारक 48. कर्मवहन मण्डल विधान 49. लघु नववेवतर विधान 49. लघु नववेवतर विधान 50. सहस्त्रनाम विधान 51. चारित्र लब्धी विधान 52. अनन्त व्रतमण्डल विधान 53. कालसर्प योग निवारक विधान 54. शानि अरिष्ट निवारक विधान 55. आचार्य परमेष्टी विधान 56. सम्मेद शिखरकृट पूजन विधान 57. सरस्त्ती विधान 58. विशार महाअर्चना विधान 59. सम्पेत क्षाविधान 51. चारित्र लब्धी विधान 51. चारित्र लब्धी विधान 55. साम्पेत्र विधान 56. सम्मेद शिखरकृट पूजन विधान 57. सरस्त्ती विधान 58. विशार महाअर्चना विधान 59. सम्पेत्र कृत विधान 51. चारित्र लब्धी विधान 51. चारित्र लब्धी विधान 55. साम्पेत्र कृत विधान 56. सम्मेद शिखरकृट पूजन विधान 57. सरस्त्ती विधान 58. विशार महाअर्चना विधान 59. विशार महाअर्चना विधान 50. सहस्त्रनी विधान 51. प्रलच्च विधान 51. प्रलच्च विधान 52. अनित्र विधान 53. कालसर्प योग निवारक विधान 54. स्रामेद शिखरकृट पूजन विधान 55. साम्पेत्र विधान 56. सम्पेत्र विधान 57. सरस्त्ती विधान 58. विशार महाअर्चना विधान 59. विशार स्वार विधान 51. प्रलच्च विधान 51. प्रलच्च विधान 51. प्रलच्च विधान 52. अन्त विधान 53. कालसर्प विधान 54. स्वार प्रलच्च विधान 55. साम्पेत्र विधान 56. सम्पेत्र विधान 57. सरस्तती विधान 58. विशार माव्यक्षी विधान 59. विशार स्वार (चिधान 50. सम्पेत्र विधान 51. प्रलच्च विधान 52. अर्वतिधान (चिधान) 53. कालस्यण्य विधान 54. स्वार (चिधान) 55. अर्वतिधान 56. सम्पेत्र विधान 57. सरस्तती विधान 58. विशार प्रलच्च विधान 58. विशार प्रलच्च विधान 59. विशार स्वार विधान 59. सर्त केष्य विधान 59. सर्त केष्य विधान 59. सर्त क्षाय (चिधान) 59. सर्त केष्य विधान 59. सर्त केष्य विधान 59. सर्त केष्य विधान 59. स			
40. एकी भाव स्तोत विधान 41. ऋषिमण्डल विधान 42. विषापहार स्त्रोत विधान 43. वृहदम्भतामर स्त्रोत विधान 43. वृहदम्भतामर स्त्रोत विधान 44. वास्तु मण्डल विधान 45. लघु नवग्रह शांतिमण्डल विधान 46. सूर्य अरिष्ट निवारक की प्रदम्भभ विधान 47. चौंसठ ऋद्धि विधान 48. कर्मदहन मण्डल विधान 49. लघु नवदेवतर विधान 49. लघु नवदेवतर विधान 41. ऋष्मिण्डल विधान 42. वास्तु मण्डल विधान 43. चौंसठ ऋद्धि विधान 44. चौंसठ ऋद्धि विधान 45. चौंसठ ऋद्धि विधान 46. सूर्य अरिष्ट निवारक 47. चौंसठ ऋद्धि विधान 48. कर्मदहन मण्डल विधान 49. लघु नवदेवतर विधान 410. श्री भार्मवाध विधान (श्रांतिनाख खोह) 411. सुगम्य वर्मामी विधान 412. कर्म निर्झरकत विधान 413. विद्यान 414. रावेद्यान 425. अत्रन्त व्रतमण्डल विधान 43. चौंसठ ऋद्धि विधान 44. वास्तु मण्डल विधान 45. सहस्त्राम विधान 46. स्त्र्य भिंसत विधान 47. चौंसठ ऋद्धि विधान 48. कर्मवहन मण्डल विधान 49. लघु नवदेवतर विधान 410. श्री भार्मवाध विधान 411. सुगम्य वर्मामी विधान 412. शांतिनाख खोह) 413. प्रांचित्राच खान 414. रावेद्यान विधान 415. भार्मवायद्यामी व्याव विधान 416. एत्य भिंसत विधान 4170. स्रंतोलचा विधान 418. अन्त विधान 419. स्त्राव्यामी व्याव विधान 419. स्त्राव्यामी व्याव विधान 410. स्त्रात्वाच विधान 410. स्त्रात्वाच विधान 411. स्त्रव्याम् विधान 412. शांतिमाच खान 413. श्री विधान 414. स्त्रव्याच विधान 415. शांति विधान 416. एत्य भिंसत विधान			
41. ऋषिमण्डल विधान 42. विषापहार स्त्रोत विधान 43. वृहद भक्तामर स्त्रोत विधान 44. वास्तृ मण्डल विधान 45. लघु नवग्रह शांतिमण्डल विधान 46. सूर्य अरिष्ट निवारक की प्रमुप्ध विधान 47. चौंसठ ऋद्धि विधान 48. कमंदहन मण्डल विधान 49. लघु नवदेवतर विधान 49. लघु नवदेवतर विधान 49. लघु नवदेवतर विधान 41. सुंग्य स्त्रमण विधान 41. चौंसठ ऋद्धि विधान 42. विधान 43. वृहद विधान 44. चौंसठ ऋद्धि विधान 45. चौंसठ ऋद्धि विधान 46. सूर्य अरिष्ट निवारक की प्रमुप्ध विधान 47. चौंसठ ऋद्धि विधान 48. कमंदहन मण्डल विधान 49. लघु नवदेवतर विधान 41. सुंग्य-च द्रमणी विधान 49. लघु नवदेवतर विधान 41. इमंग्य-च द्रमणी विधान 41. इमंग्य-च द्रमणी विधान 42. विधान 43. वृहद विधान 44. चौंसठ ऋद्धि विधान 45. चौंसठ ऋद्धि विधान 46. सुंग्व अर्थाचिधान 47. चौंसठ ऋद्धि विधान 48. कमंदहन मण्डल विधान 49. लघु नवदेवतर विधान 41. इमंग्य-च द्रमणी विधान 41. इमंग्य-च द्रमणी विधान 41. इसंवित पूजा विधान 41. इसंवित पूजा विधान 41. इसंवित पूजा विधान 43. चौंस्य (विधान) 44. चौंसवान (विधान) 45. अर्थाच विधान 46. चौंस्य भावित्रच विधान 47. चौंसठ ऋद्धि विधान 48. कमंदहन पण्डल विधान 49. लघु नवद्यान 49. लघु नवद्यान विधान 410. और प्रमुण्य द्रमणी विधान 411. इसंवित पुजा विधान 412. इसंविधान 413. अर्थावराविधान 463. और अविदर भिंति विधान 464. चैंद्य भिंति विधान 465. और ऋषभदेव विधान 466. चौंद्य भाविद्यान 468. और चौंद्यान 468. और चौंद्य भाविद्यान 468. और चौंद्यान 468. और			
43. वृहदभक्तामर स्तोत्र विधान 44. वास्तु मण्डल विधान 45. लघु नवस्तु शांतिमण्डल विधान 46. सूर्य अरिष्ट निवारक श्री पदमप्रभु विधान 47. जांसठ ऋद्धि विधान 48. कर्मदहन पण्डल विधान 49. लघु नवसेवतर विधान 49. लघु नवसेवतर विधान 50. सहस्त्रनाम विधान 51. चारित्र लब्धी विधान 52. अनन्त व्रतमण्डल विधान 53. कालसर्प योग निवारक विधान 54. शांनि अरिष्ट निवारक विधान 55. कालसर्प योग निवारक विधान 55. कालसर्प योग निवारक विधान 56. सम्मेद शिखरकृट पूजन विधान 57. सरस्तती विधान 58. विशर महाअर्चना विधान 59. सहत्त्र विधान 51. चारित्र लब्धी विधान 51. चारित्र लब्धी विधान 52. अनन्त व्रतमण्डल विधान 53. कालसर्प योग निवारक विधान 54. शांनि अरिष्ट निवारक विधान 55. काल्यार्थ परमेण्डी विधान 56. सम्मेद शिखरकृट पूजन विधान 57. सरस्तती विधान 58. विशर महाअर्चना विधान 59. शां कि विधान 51. चारित्र लब्धी विधान 51. चारित्र लब्धी विधान 51. चारित्र लब्धी विधान 52. अनन्त व्रतमण्डल विधान 53. कालसर्प योग निवारक विधान 54. शां अपर्य विधान 55. आचार्य परमेण्डी विधान 56. सम्मेद शिखरकृट पूजन विधान 57. सरस्तती विधान 58. विशर महाअर्चना विधान 59. विशर महाअर्चना विधान 50. सहस्त्र विधान 51. चारित्र लब्धी विधान 51. चारित्र लब्धी विधान 52. अनित्र विधान 53. कालसर्प योग सगरर विधान 54. स्वार विधान 55. आस्त्र विधान 56. सम्मेद शिखरकृट पूजन विधान 57. सरस्तती विधान 58. चिशर महाअर्चना विधान 58. विशर महाअर्चना विधान 59. सर्प केवली विधान 59. सर्प केवली विधान 59. सर्प केवली विधान 50. सहस्त्र विधान 50. सहस्त्र विधान 51. चारित्र चिशर सम्पित्र विधान 51. चारित्र चिशर मास्तर विधान 52. अन्तर विधान 53. कालसर्प विधान 54. स्वार विधान 55. आस्त्र विधान 56. सम्पेद शिखरकृट पूजन विधान 57. सरस्तती विधान 58. चिशर मास्तर विधान 58. विधान 59. सर्प केवली विधान 59. सर्प केवली विधान 51. सास्तर विधान 51. स्वार पण्ड केवणा 51. सास्तर विधान 51.			
44. वास्तु मण्डल विद्यान 45. लघु नवग्रह शांतिमण्डल विद्यान 46. सूर्य अस्तिर विद्यान 46. सूर्य अस्तिर निवारक श्री पदमप्रभु विद्यान 47. चौंसठ ऋद्धि विद्यान 48. कमंदहन मण्डल विद्यान 49. लघु नवदेवतर विद्यान 50. सहस्रवाम विद्यान 50. सहस्रवाम विद्यान 51. चारित्र लब्धी विद्यान 52. अनन्त व्रतमण्डल विद्यान 53. कालस्तर्य चेत्रान 54. शांति विद्यान 55. काल्यर्य प्रमेखि विद्यान 55. आचार्य परमेखि विद्यान 55. आचार्य परमेखि विद्यान 56. सम्मेद शिष्ट निवारक विद्यान 57. सरस्रवानी विद्यान 58. कालपर्य प्रमेखि विद्यान 59. सहस्रवाम विद्यान 51. चारित्र लब्धी विद्यान 51. चारित्र लब्धी विद्यान 52. अनन्त व्रतमण्डल विद्यान 53. कालस्तर्य चेत्रा विद्यान 54. शांति अर्थेट निवारक विद्यान 55. आचार्य परमेखी विद्यान 56. सम्मेद शिष्ट कृत्य विद्यान 57. सरस्रवानी विद्यान 58. विश्रय महाअर्चना विद्यान 59. विश्रय महाअर्चना विद्यान 510. कंपन्य प्रमेखी विद्यान 511. एन्दर विद्यान 512. सार्व विद्यान 513. अवस्थित विद्यान 514. सार्व विद्यान 515. औं स्थ्यप्रदेव विद्यान 516. एन्दर विद्यान 517. शांति विद्यान 518. अपन्त विद्यान 519. प्रमेख कल्याणक विद्यान 517. सरस्रवानी विद्यान 518. श्री योगसार विद्यान 519. प्रमेण एकादशी व्रत विद्यान 518. श्री योगसार विद्यान 519. प्रमेख स्वर्थ विद्यान 518. श्री योगसार विद्यान 519. प्रमेख स्वर्थ विद्यान 519. प्रमेख कल्याणक विद्यान 510. संवर्ष प्रमु किंदि विद्यान 510. संवर्ष प्रमु क्षियोन 511. संवर्ष प्रमु विद्यान 512. संवर्ष विद्यान 513. संवर्ष प्रमु कल्याणक विद्यान 514. संतर्ष विद्यान 515. श्री ऋषभदेव विद्यान 516. एन्द्र संव्यान 516. एन्द्र संव्यान 5170. संवर्ष विद्यान 5171. शांतिवाद विद्यान 5172. आदिनाथ विद्यान 5173. ऋषभदेव विद्यान 5174. संतर्ष विद्यान 5175. शांति विद्यान 5175. संवर प्रमु विद्यान 518. श्री प्रमु विद्यान 519. पर केवल विद्यान 5174. संतर्य विद्यान 5175. संवर्य विद्यान 518. ऋर्य विद्यान 519. पर केवल विद्य	42. विषापहार स्त्रोत विधान	103. 96 [े] क्षेत्रफल विधान	162. शांतिभक्ति विधान
45. लघुँ नवग्रह शांतिमण्डल विधान 46. सूर्य अस्थि निवासक श्री पदमप्रभु विधान 47. चाँसत् ऋद्वि विधान 48. कर्मदहन मण्डल विधान 49. लघु नववंवतर विधान 50. सहस्त्राम विधान 111. सुग-य वर्गमी विधान 112. कर्म निइस्त्रिका विधान 113. निर्दुंख सप्तमी व्रत विधान 114. रविवत पूजा विधान 153. कालतम्प योग निवासक विधान 154. शांति अधियान 175. आदि विधान 170. सर्वतोभग्रद विधान 170. सर्वतोभग्रद विधान 170. सर्वतोभग्रद विधान 170. सर्वतोभग्रद विधान 170. अर्वताभग्रद विधान 171. अर्वताभग्रद विधान 172. अर्वताभग्रद विधान 173. ऋषभवेव विधान 174. संतालिभ्रद विधान 175. सात्रविधान 176. प्रवास्त्रद विधान 177. स्वताभग्रद विधान 176. प्रवास्त्रद विधान 177. स्वताभग्रद विधान 178. श्री अर्यास्तिभग्रद विधान 179. गण्यस वलय विधान 179. गण्यस वलय विधान 170. अर्वताभ्रद विधान 170. अर्वताभग्रद विधान 171. अर्वताभग्रद विधान 172. आविवाधान 173. ऋषभवेव विधान 174. संतालिभग्रद विधान 175. सर्वताभग्रद विधान 176. प्रवास्त्रविधान 177. स्वताभ्रद विधान 177. स्वताभ्यम्य 178. श्री अर्यास्वत्रभग्रद विधान 179. गण्यस वलय विधान 170. अर्वताभग्रद विधान 170. अर्वताभग्रद विधान 170. अर्वताभग्रद विधान 170. अर्वताभग्रद विधान 171. संवताभग्रद विधान 175. अर्वताभग्रद विधान 176. अर्वताभग्रद विधान 177. सर्वताभग्रद विधान 177. सर्वताभग्य	43. वृहदभक्तामर स्तोत्र विधान	104. बड़े बाबा विधान	163. आ. श्रीविराग सागर विधान
46. सूर्य अरिष्ट निवारक श्री पदमप्रभु विधान 108. चान्द्रनपुर महावीर विधान 167. रक्षाबन्धन विधान 168. क्रमें द्वर पण्डल विधान 109. श्री शांति विधान (वण्डेला) 168. क्रमें द्वर पण्डल विधान 111. सुगन्ध वश्रमी विधान 170. सर्वतोभद्र विधान 170. सर्वतेभद्र विधान 170. सर्वतेभद्र विधान 170. सर्	44. वास्तु मण्डल विधान		
श्री पदमप्रभु विधान 47. चाँसठ ऋद्धि विधान 48. कर्मदहन मण्डल विधान 49. लघु नववेवतर विधान 50. सहस्त्रनाम विधान 51. चारित्र लब्धी विधान 51. चारित्र लब्धी विधान 52. अनन व्रतमण्डल विधान 53. कालसर्प योग निवारक विधान 54. ग्रानि अरिष्ट निवारक विधान 55. काल्यार्प एमेण्डी विधान 56. सम्मेद शिखरक्ट पूजन विधान 57. सरस्तती विधान 58. विशर महाअर्चना विधान 59. श्रीत अरिष्ट निवारक विधान 51. चारित्र लब्धी विधान 51. चारित्र लब्धी विधान 52. अनन व्रतमण्डल विधान 53. कालसर्प योग निवारक विधान 54. ग्रानि अरिष्ट निवारक विधान 55. आचार्य परमेण्डी विधान 56. सम्मेद शिखरकुट पूजन विधान 57. सरस्तती विधान 58. विशर महाअर्चना विधान 58. विशर महाअर्चना विधान 59. श्रीर तिधान 510. श्री लालिश स्वित्र विधान 5110. स्वर्ग विधान 5111. स्वर्ग विधान 512. अपित्र विधान 513. स्वर्ग विधान 54. ग्रानि अरिष्ट पूजन विधान 55. आचार्य परमेण्डी विधान 56. सम्मेद शिखरकुट पूजन विधान 57. सरस्तती विधान 58. विशर महाअर्चना विधान 59. श्री योगसार विधान 510. सुख सम्मित व्रत विधान 5111. स्वर्ग विधान 512. स्वर्ग विधान 513. स्वर्ग विधान 514. स्वर्ग विधान 515. चारित्र प्रचलय विधान 516. सम्पति व्रवान 517. स्वर्ग विधान 518. ह्यांत विधान 510. श्री शांति विधान 510. श्री शांति विधान 511. शांतिविधान 512. आदिनाथ विधान 513. स्वर्ग विधान 514. स्वर्ग विधान 515. स्वर्ग विधान 516. सम्पति व्रवान 517. स्वर्ग विधान 518. स्वर्ग विधान 516. स्वर्ग विधान 517. स्वर्ग विधान 518. स्वर्ग विधान 510. श्री शांति विधान 510. स्वर्ग विधान 510. स्वरंग विधान 511. स्वरंग विधान 511. स्वरंग विधान 512. आदिनाथ स्वर्ग विधान 513. स्वर्ग विधान 514. स्वर्ग विधान 515. स्वरंग विधान 516. स्वरंग विधान 517. स्वरंग विधान 517. स्वरंग विधान 517. स्वरंग विधान 517. स्वरंग विधान 518. स्वरंग विधान 510. स्वरंग विधान 510. स्वरंग विधान 510. स्वरंग विधान 510. स्वरंग विधान 511. स्वरंग विधान 512. आदिनाथ खिडान 513. स्वरंग विधान 513. स्वरंग विधान 514. स्वरंग विधान 515. स्वरंग विधान 516. स्वरंग विधान 517. स्वरंग विधान 517. स्वरंग विधान 517. स्वरंग विधान 517. स्वरंग विधान 518. स्वरंग विधान 510. स्वरंग			
47. चौंसठ ऋद्धि विधान 48. कर्मवहन मण्डल विधान 49. लघु नवदेवतर विधान 49. लघु नवदेवतर विधान 50. सहस्रज्ञाम विधान 111. क्रमें निइस्त्रत विधान 112. कर्म निइस्त्रत विधान 113. निर्दुंख सप्तमी व्रत विधान 114. रविव्रत पूजा विधान 115. आदि विधान 116. ऋदिद्ध सिद्धि विधान 170. सर्वतेषभ्रद्ध विधान 170. सर्वतेषभ्रद्ध विधान 171. शांतिविधान (अष्टापद) 172. आदिनाथ विधान (अष्टापद) 173. ऋषभदेव विधान (अष्टापद) 174. सँतालिश भिक्त विधान 175. आप दिधान 176. पंजकल्याणक विधान 177. सहावीर पंजस्पत विधान 177. सहावीर पंजस्पत विधान 178. अनि अराष्ट पूजन विधान 179. मौन एकादशी व्रत विधान 179. गणधर वल्य विधान 179. गणधर वल्य विधान			
48. कर्मदहन मण्डल विधान 49. लघु नवदेवतर विधान 50. सहस्त्रनाम विधान 51. चारित्र लब्धी विधान 51. चारित्र लब्धी विधान 51. चारित्र लब्धी विधान 52. अनन्त व्रतमण्डल विधान 53. कालत्तमण्डल विधान 54. शानि अरिष्ट निवारक विधान 55. आचार्य परमेप्छी विधान 55. आचार्य परमेप्छी विधान 56. सम्मेद शिखरकूट पूजन विधान 57. सरस्वती विधान 58. विशर महाअर्चना विधान 58. विशर महाअर्चना विधान 59. परत्र केबली विधान 110. श्री पाश्रवंनाथ विधान 111. सेन्द्रिय स्वापन 1120. सुष्ट सप्तमी व्रत विधान 115. सोभाग्यवशमी व्रत विधान 116. पुग्चर विधान 117. सेहिणी व्रत विधान 118. अनन्त वीर्य केबली विधान 119. मौन एकादशी व्रत विधान 119. मौन एकादशी व्रत विधान 119. गण्डस व्रत्व विधान 119. गण्डस व्यवान 119. गण्डस व्यवान 119. गण्डस व्यवान 119. गण्डस व्यवान 119. गण्डस व्यव्या व्यान (लघु)			
49. लघु नवदेवतर विधान 50. सहस्रनाम विधान 51. चारित्र लब्धी विधान 51. चारित्र लब्धी विधान 52. अनन्त व्रताण्डल विधान 53. कालसर्प योग निवारक विधान 54. शानि अरिष्ट निवारक विधान 55. आचार्य परमेण्डी विधान 56. सम्मेद शिखरकूट पूजन विधान 57. सरस्त्ती विधान 58. विशार महाअर्चना विधान 59. सम्पति व्यान 510. सर्वती विधान 5110. स्वर्गनेभ्र विधान 512. अतिवाध विधान 513. ऋषभदेव विधान 514. सँतालिश भिक्त विधान 55. आचार्य परमेण्डी विधान 56. सम्मेद शिखरकूट पूजन विधान 57. सरस्तती विधान 58. विशार महाअर्चना विधान 59. विशार महाअर्चना विधान 510. सुख सम्पति व्रत विधान 5110. सुख सम्पति व्रत विधान 5111. सुगन्य दशमी विधान 512. कर्म निव्यान 513. क्ष्रियोन स्विधान 514. सँतालिश भिक्त विधान 515. शांति विधान 516. सम्पति व्रत विधान 5170. सर्वतेभ्र विधान 5171. शांतिविधान 5172. अतिवाभ्र विधान 5173. ऋषभदेव विधान 5174. सँतालिश भिक्त विधान 5175. शांति विधान 5175. शांति विधान 5176. पंचकत्याणक विधान 51777. सहवीर पंचकत्याणक विधान 5178. संवर्गनेभ्र विधान 518. विशार महाअर्चना विधान 519. गणधर वल्य विधान (लघु)			
50. सहस्त्रनाम विधान 51. यारित्र लब्धी विधान 52. अनन व्रतमण्डल विधान 53. कालसर्प योग निवारक विधान 54. शानि अरिष्ट निवारक विधान 55. आचार्य परमेण्डी विधान 56. सम्मेद शिखरक्ट पूजन विधान 57. सरस्त्री विधान 58. विशर महाअर्चना विधान 59. विशर महाअर्चना विधान 510. सुख सम्मित व्रत विधान 5111. सौभाग्यवश्रमी व्रत विधान 512. आविनाथ विधान 513. ऋषमर्विव विधान 514. सौभाग्यवश्रमी व्रत विधान 515. शाचार्य परमेण्डी विधान 518. अनन वीर्य केवली विधान 519. मौन एकावश्री व्रत विधान 519. सुख सम्मित व्रत विधान 510. सुख सम्मित व्रत विधान 510. सुख सम्मित व्रत विधान 510. सुख सम्मित व्रत विधान 5111. शांतिविधान (सर्वोत्यार्थ) 512. अपित विधान 513. सूष्यते विधान 514. सौभाग्यवश्रमी व्रत विधान 515. स्वरार प्रचकत्याणक विधान 516. सम्मित व्यान 517. स्वरार प्रचकत्याणक विधान 518. विशर महाअर्चना विधान 519. गणधर वलय विधान (लघु)			
51. चारित्र लब्धी विधान			
52. अनन्त ब्रतमण्डल विधान 114. रविब्रत पूजा विधान 173. ऋषभदेव विधान (नजफगढ़) 53. कालसर्प योग निवारक विधान 115. सौभाग्यदशमी ब्रत विधान 174. सैंतालिश भिक्त विधान 54. शांति अरिष्ट निवारक विधान 116. पुग्चर विधान 175. शांति विधान (तिजार) 55. आचार्य परमेच्दी विधान 117. रोहिणी ब्रत विधान 176. पंचकल्याणक विधान (लघु) 56. सम्मेद शिखरकूट पूजन विधान 119. अनन्त वीर्य केवली विधान 177. महावीर पंचकल्याणक विधान 57. सरस्वती विधान 119. मौन एकादशी ब्रत विधान 178. श्री योगसार विधान 58. विशद महाअर्चना विधान 120. सुख सम्पति ब्रत विधान 179. गणधर बलय विधान (लघु)			
53. कालसर्प योग निवारक विधान 54. शनि अरिष्ट निवारक विधान 55. आचार्य परमेच्छी विधान 56. सम्मेद शिखरकूट पूजन विधान 57. सरस्वती विधान 58. विशद महाअर्चना विधान 59. विशद महाअर्चना विधान 50. सम्पती विधान 510. सुख सम्पति व्रत विधान 5110. सुख सम्पति व्रत विधान 5120. सुख सम्पति व्रत विधान 513. सौगारविधान 514. सैतालिश भिक्त विधान 515. शांति विधान (तिजार) 516. पंचकल्याणक विधान 517. सहावीर पंचकल्याणक विधान 518. बिशद महाअर्चना विधान 519. गणधर बलय विधान (लघु)	_		
54. शनि अरिष्ट निवारक विधान 116. पुग्न्दर विधान 175. शांति विधान (तजारा) 55. आचार्य परमेष्ठी विधान 117. रोहिणी क्रत विधान 176. पंचकत्याणक विधान (लघु) 56. सम्मेद शिखरकूट पूजन विधान 118. अनन्त वीर्य केवली विधान 177. महावीर पंचकत्याणक विधान 57. सरस्वती विधान 119. भौन एकादशी व्रत विधान 178. श्री योगसार विधान 58. विशद महाअर्चना विधान 120. सुख सम्मित व्रत विधान 179. गणधर वलय विधान (लघु)			
55. आचार्य परमेप्टी विधान 117. रोहिणी व्रत विधान 176. पंचकल्याणक विधान (लघु) 156. सम्मेद शिखक्ट्र पूजन विधान 118. अनन्त वीर्य केवली विधान 177. सहावीर पंचकल्याणक विधान 179. सहावीर पंचकल्याणक विधान 158. विश्रत महाअर्चना विधान 120. सुख सम्पति व्रत विधान 179. गणधर वलय विधान (लघु)			
56. सम्मेद शिखरकूट पूजन विधान 118. अनन्त वीर्य केवली विधान 177. महावीर पंचकल्याणक विधान 57. सरस्वती विधान 119. मौन एकादशी ब्रत विधान 178. श्री योगसार विधान 58. विशाद महाअर्चना विधान 120. सुख सम्पति ब्रत विधान 179. गणधर बलय विधान (लघु)			
57. सरस्वती विधान 119. मौन एकादशी व्रत विधान 178. श्री योगसार विधान 58. विशाद महाअर्चना विधान 120. सुख सम्पति व्रत विधान 179. गणधर बलय विधान (लघु)			
58. विशद महाअर्चना विधान 120. सुख सम्पति व्रत विधान 179. गणधर वलय विधान (लघु)	57. सरस्वती विधान		
5५. कल्याण मादर विधान (बड़ागाव)	59. कल्याण मंदिर विधान (बड़ागांव)	121. चन्दन षष्ठीव्रत विधान	180. देहरा तिजारा चन्द्रप्रभु विधान (लघु)
60. अहिच्छत्र पार्श्वनाथ विधान 122. श्री पार्श्वनाथ विधान (निमोला) 181. जम्बू स्वामी विधान	60. अहिच्छत्र पार्श्वनाथ विधान		181. जम्बू स्वामी विधान
61. अर्हतनाम विधान 123. श्री पार्श्वनाथ विधान (गंभीरा) 182. जैनत्व संस्कार विधान	61. अर्हतनाम विधान	123. श्री पार्श्वनाथ विधान (गंभीरा)	182. जैनत्व संस्कार विधान
संकलन प्रयास : मनि श्री_विशालसागर जी महाराज			

संकलन प्रयास : मुनि श्री विशालसागर जी महाराज